P. 6

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कविवर लल्लूलालजी संगृहीत.

सभाविलास।

जिसमें

सामयिक दृष्टान्त बचन चातुरी सब आगरी नागरीके अनेक कतिपय अवलि सुमधुर सरलकाव्यमें लोकरं-जनार्थ मनप्रसन्न वर्णित हैं.

उसीको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापेखानेमें

मेनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने

छापकर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९७२, शाके १८३७.

कल्याण-मुंबई.

संग्रह० लल्लूलाल सभा-विलास 1917

Date

Teacher's Signature

Teacher's Signature

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

सभाविलासप्रारंभः ।

दोहा ।

गंगा गंगा कहतही, निर्मल होत शरीर ।
गान आदि ध्याये सुयश, न्हाये रहत न पीर ॥
विभु व्यापक सर्वज्ञ प्रभु, आदि पुरुष भगवान ।
सुर नर मुनि वंदन करैं, त्यहि नमि चह कल्याण ॥
नयनसरोज सुहावने, नटवर वेष अनूप ।
खेलत व्रजवनितान सँग, वंदहुँ श्याम स्वरूप ॥
मन तन धन सब वारहूं, कृष्णविहारी काज ।
राधा वर दुख अवशि हर, हमरी तुमको लाज ॥
सो०—जयतियशोदामात, जिन जाये प्रभुसोंतनय ।
[illegible] वंशीधर विख्यात [illegible] ॥

दोहा–वसहु हमारे हृदयमें, कोटि तेतिसौ देव ।
इच्छा याही चित्तमें, सुख दै दुख हरिलेव ॥
सो०–विघनहरन गणराय, मूषकवाहन गजवदन ॥
गणपतिचरण मनाय, तबै काज कछु कीजिये ॥१॥
दोहा–आन न भावत स्वादई, पास गह्यो सुमलिंद ॥
कृष्णचरण अरविंदको, पिवत सदा मकरंद ॥ २ ॥
ममता भ्रम ताके मिटे, उपजे समता ज्ञान ॥ रमै जो
रमता रामसों, जमता गहे न मान ॥ ३ ॥ साध
सक्यों नतु साध सँग, लाय न सक्यो समाध ॥
विषयाविषादउपाद तज, हरिपद आद अराध ॥ ४ ॥
निगम रु गीतामें कह्यो, परमपुनीता नाम ॥ बीत्य
जन्म जु जातहै, भजले सीताराम ॥ ५ ॥ मनक
मिटै मलीनता, होय दीनता साथ ॥ नीकी र
प्रवीनता, भजिये दीनानाथ ॥ ६॥ जिन पायो हरिर
मरम, मिटे भरम भ्रम दोय ॥ गह्यो धर्म अरु क

नतरन, कारन ह्वयो उबार ॥ कंसपछारन मान हारि, गिरधारनि आधार ॥ ८ ॥ काम क्रोध लागी सुरत, वहे अभागी जान ॥ हरिअनुरागी जासु मति, सो बडभागी मान ॥ ९ ॥ सुखदायक नायक भजत, उपजायक आनंद ॥ तीन लोक नायक जपो, अघघालक ब्रजचंद ॥ १० ॥ घने वाजि गजराज हैं, सुखके सने समाज ॥ बने ठने किहि काजके, जो न हेत ब्रजराज ॥ ११ ॥ उपजावन आनंद उर, पतित सुपावन राम ॥ आवन जावन जात मिट, जप वामनको नाम ॥ १२ ॥ जौलों घटमें श्वास है, होय रहो हरिदास ॥ पूरे आश निराशकी, वासुदेव उरवास ॥ १३ ॥ मान मुंड मालिक कह्यो, नरककुंड नहिं जाय ॥ कोटि झुंड पापी तरें, पुंडरीकगुण गाय १४॥

अथ दृष्टांत।

भाव सरस समुझत सबै, भले लगे यहि भाय ॥ जैसे औसरकी कही, बाणी सुनत सुहाय ॥ १५ ॥

नीकिहुपै फीकी लगै, बिन औसरकी बात ॥ जैसे
वरणत युद्धरस, नाहिं शृंगार सुहात ॥ १६ ॥
फीकोहू नीकी लगै, कहिये समय विचार ॥ सबके
मन हर्षित करै, ज्यों विवाहमें गार ॥ १७ ॥ जाहीते
कछु पाइये, करिये ताकी आस ॥ रीते सरवर
गये, कैसे बुझै पियास ॥ १८ ॥ स्वातिबुंद
सघनमें, चातक मरत पियास ॥ जो जाहीको
रह्यो, सो तेहि पूरे आस ॥ १९ ॥ भले बुरे सब
एकसों, जौलों बोलत नाहिं ॥ जान परत है काक
पिक, ऋतुवसंतके माहिं ॥ २० ॥ मधुर वचनते
जात मिट, उत्तम जन अभिमान ॥ तनक शीत
जलसों मिटै, जैसे दूध उफान ॥ २१ ॥ सबै सहायक
सबलके, कोउ न निबल सहाय ॥ पवन जगावत
आगको, दीपहि देत बुझाय ॥ २२ ॥ प्रकृति
मिले मन मिलत है, अनमिलते न मिलाय ॥ दूध
दहीतें जमत है, कांजीतें फट जाय ॥ २३ ॥

जैसे॑रघर कबहुँ न जाइये, गये घटतिहै ज्योति ॥
॥ रविमंडलमें जात शशि, क्षीणकला छवि होति
बके॥२४॥ ब्रह्म बनाये बन रहे, ते फिर और बनै न ॥
ही॑कान कहत नहिं बैन ज्यों, जीभ सुनत नहिं बैन
र॥२५॥ मूरख गुण समुझै नहीं, तौन गुणीमें चूक ॥
है ॥ाहा भयो दिनकरविभव, देखे जो न उलूक
॥ २६॥ मूढ तहांही मानिये, जहां न पंडित होय ॥
सकीपकको रविके उदय, बात न बूझै कोय
क॥ २७ ॥ निपट अबुध समझै कहा, बुधिजन
नते वचनविलास ॥ कबहूं भेक न जानहीं, अमल
ति कमलकी बास ॥ २८ ॥ साँच झूठ निर्णय करै,
व नीतिनिपुण जो होय ॥ राजहंस बिन को करै,
क्षीर नीरको दोय ॥ २९ ॥ दोषहिको उमहै गहै,
ण न गहै खललोक ॥ पियै रुधिर पय ना पियै-
गी पयोधर जोक ॥ ३० ॥ कारज धीरे होत है,
हे होत अधीर ॥ समय पाय तरुवर फरै, केतक

सींचो नीर ॥ ३१ ॥ क्यों कीजे ऐसो जतन, जातें
काज न होय ॥ पर्वतपै खोदै कुआ, कैसे निकसै क
तोय ॥ ३२ ॥ जो चाहै सोई करैं, बडे अशंकिततन
अंग ॥ सबके देखत नगन हर, धरतढ ग
नारि अर्द्धंग ॥ ३३ ॥ बडे सहजही बातसों, रीझल
देत बखशीश ॥ तुलसीदलतें विष्णु ज्यों, आक म
धतूरे ईश ॥ ३४ ॥ सुधरी बिगरै वेगही, बिगरी
फिर सुधरै न ॥ दूध फटे कांजी परे, सो फिर दूध क
बनै न ॥३५॥ छोटे नर ते रहत हैं, शोभायुत शिर-
ताज ॥ निर्मल राखै चांदनी, जैसे पायंदाज ॥ ३६ ॥
सहज रसीलो होय सो, करै अहितपर हेत ॥ जैसे
पीडित कीजिये, ईख तऊ रस देत ॥ ३७ ॥
कबहुं कुसंग न कीजिये, किये प्रकृतिकी हानि ॥
गूंगेको समझायबो, गूंगेकी गति आनि ॥ ३८ ॥
कहा करै कोऊ जतन, प्रकृति औरकी और ॥ वि

१ जिवावें.

ातेरे ज्योंवे सुधा, उपजै एकहि ठौर ॥ ३९ ॥ डरै
कसै काहू दुष्टसों, जाहि प्रेमकी बान ॥ भौंर न छांडै
कतकी, तीखे कंटक जान ॥ ४० ॥ धन बाढै मन
रतढ गयो, नाहिंन मन घट होय ॥ ज्यों जल संग बाढै
ाझलज, जल घट घटै न सोय ॥ ४१ ॥ सबते लघु
ाक माँगवो, यामें फेर न सार ॥ बलिपै याचतही
ार ये, वामन तनु करतार ॥ ४२ ॥ सब इकसे होत
ूध कहूं, होत सबनमें फेर ॥ कपरो खादी वाफतो,
र-हु तवा शमशेर ॥ ४३ ॥ जैसेकी सेवा करै, तै-
॥ आशा पूर ॥ रत्नाकर सेवै रतन, सर सेवै शा-
ेसूर ॥ ४४ ॥ होत सुसंगति सहज सुख, दुख कुस-
॥ के थान गंधी और लुहारकी, बैठो देखि दुकान
॥ ४५ ॥ ठौर छुटेते मीतहू, व्है अमीत सतरात ॥
॥ जल उखरे कमलको, जारत गारत जात॥४६॥
वि त गुणी जात न तहाँ, आडंबरयुत सोय ॥
चै चंग अकाशलौं, जो गुणसंयुत होय ॥ ४७ ॥

गुणवासे संपति लहै, लहै न गुण बिन कोय ॥ कौन
नीर पतालते, जो गुणयुत घट होय ॥ ४८ ॥ आंसा
छोटो गनियै नहीं, याते होत बिगार ॥ तृणसमूहकूइ
छिनकमें, जारत तनक अँगार ॥ ४९ ॥ पंडि
जगको श्रम मरम, जानत जे मतिधीर ॥ कबहूं बांझ
न जानही, तनप्रसूतकी पीर ॥ ५० ॥ वीर पराक्र
म ना करै, तासों डरत न कोय ॥ बालकहूंके चि
त्रको, बाघ खिलौना होय ॥ ५१ ॥ नृपप्रताप
देशमें, रहै दुष्ट नहिं कोय ॥ प्रगटै तेज दिनेशकन
तहां तिमिर नहिं होय ॥ ५२ ॥ कारज ताहीरत
सरे, करै जो समय निहार ॥ कबहुं न हारै खेल जेक
खेलै दाँव विचार ॥ ५३ ॥ कोऊ दूर न कर सकै
उलटे विधिके अंक ॥ उदधि पिता तऊ चंद्रको
धोय न सक्यो कलंक ॥५४॥ गाहक सबै सुपूतके
सारै काज सुपूत ॥ सबको ढंपन होतु है, जैसे
को सूत ॥५५॥ करत करत अभ्यासके, जडम ॥

कोंन सुजान ॥ रसरी आवत जातते, सिलपर परत
आसान ॥ ५६ ॥ को सुख को दुख देत है, देत कर्म
झकझोर ॥ उरझै सुरझै आपही, ध्वजा पवनके जोर
॥५७॥ भलो करत लागै विलंब, विलंब न बुरे
बार ॥ भवन बनावत दिन लगै, ढाहत लगै न
बार ॥५८॥ सांई अपना आपनो, रहै निरंतर
साथ ॥ होत पराये आपनो, शस्त्र पराये हाथ
॥५९ ॥ कहा रसमें कहा रोसमें, अरिसों
जिन पतियाय ॥ जैसे शीतल तप्त जल,
डारत अग्नि बुझाय ॥ ६० ॥ अन्तर अंगुरि
चारको, सांच झूठमें होय ॥ सब माने देखी कही,
सुनी न माने कोय ॥ ६१ ॥ होय भलेके सुत बुरो,
भलो बुरेके होय ॥ दीपकसों काजल प्रगट, कमल
कीचते जोय ॥ ६२ ॥ होय भले चाकरनते, भलो
धनीको काम ॥ ज्यों अंगद हनुमानते, सीता पाई
राम ॥ ६३ ॥ सुख सज्जनके मिलनको, दुर्जन मिले

जनाय ॥ जानै ऊख मिठासको, जब मुख नीम च-
य॥ ६४ ॥ जाहि मिले सुख होतु है, तिहि बि-
दुख होय ॥ सूर उदय फूलै कमल, ता बिन सकु-
सोय ॥ ६५ ॥ झूठेहूं करिये जतन, कारज बि-
नाहिं ॥ कपट पुरुष धन खेतपर, देखत मृग [illegible]
जाहिं ॥ ६६ ॥ कारज सोई सुधरि है, जो क-
समभाय ॥ अति बरसे बरसे विना, ज्यों जग [illegible]
विलाय ॥ ६७ ॥ रहै प्रजा धन यत्नसों, तहां [illegible]
तरवार ॥ सो फल कोउ न ले सकै, जहां कट-
डार ॥ ६८ ॥ पंडित अरु वनिता लता, शो-
आश्रय पाय ॥ है माणिक बहु मोलको, हेमज-
छबि छाय ॥ ६९ ॥ अपनी प्रभुताको सबै, [illegible]
त झूठ बनाय ॥ वेश्या वर्ष घटावही, योगी
बढाय ॥ ७० ॥ कहूं कहूं गुण दोषते, उपजत
शरीर ॥ मधुरी वाणी बोलिकै, परत पींजरा
॥ ७१ ॥ भले बुरे निबहैं सबै, महत पुरुषके स-

र सर्प जल अग्नि ये, बसत शंभुके अंग ॥ ७२ ॥
ना कहेहू सतपुरुष, परकी पूरे आश ॥ कौन
हत है सूर्यको, घर घर करत प्रकाश ॥ ७३ ॥
हु कहि नीच न छेडियै, भलो न वाको संग ॥
त्थर डारे कीचमें, उछरि बिगारे अंग ॥ ७४ ॥
ठी मीठी वस्तु नहिं, मीठी जाकी चाह ॥ अमिली
सरी छाँडिकै, आफू खात सराह ॥ ७५ ॥ खाय
खरचै सूम धन, चोर सबल ले जाय ॥ पीछे
यों मधुमाक्षिका, हाथ मलै पछताय ॥ ७६ ॥
त्तम विद्या लीजियै, यदपि नीचपै होय ॥ पऱ्यौ
अपावन ठौरमें, कंचन तजत न कोय ॥ ७७ ॥ जान
बूझ अजुगत करै, तासों कहा बसाय ॥ जाग-
त्ही सो... रहै, ताको कहा जगाय ॥ ७८ ॥ सजन
बचावै कष्टते, रहै निरंतर साथ ॥ नयनसहायी जो
पलक, देह सहाई हाथ ॥ ७९ ॥ अरिके करमें
जियै, अवसरको अधिकार ॥ ज्यों ज्यों द्रव्य लुटा-

य है, त्यों त्यों यशविस्तार ॥ ८० ॥ बुद्धि लो
गंभीरको, संगत लागे नाहिं ॥ ज्यों चन्दन ढिग अ
रहत, विष न होय तिहि माहिं ॥ ८१ ॥ सज्जनके
दुखहू दिये, दुरजन पूरे आस ॥ जैसे चंदनको घिस
सुंदर देत सुवास ॥ ८२ ॥ सज्जन चित कबहुं तो
धरत, दुरजन केहू बोल ॥ पाहन मारे आमको, न
फल देत अमोल ॥ ८३ ॥ बिरले नर पंडित गुज्
बिरले बूझनहार ॥ दुखखंडन बिरले पुरुष, ते
संसार ॥८४॥ जे करतार बडे किये, मग पग धरे
विचार ॥ दुरजनहूंसों मिल चलै, बोले रोष नि
॥ ८५ ॥ जाहि बडाई चाहिये, तजे न उत्तम साथ अ
जो पलाश संग पानके, पहुँचे राजा हाथ ॥ ८६ ते
वचन पारखी होहु तू, पहले आप न भाख ...
नहिं भाखिये, यही सीख जिय राख ॥ ८७ ॥ श्र
नयन मुख नासिका, सबहीके इक ठौर ॥ हँसि

१ पत्थर.

द्धि बोलिवो देखिवो, चतुरनको कछु और ॥ ८८ ॥
ा उइक कामिन अरु कविबयन, दोऊ रसकी ठौर ॥
ज्जनवेधकको मन बेधई, द्वै कामिन कवि और ॥ ८९॥
घिसो तू चाहै अधिक रस, सीख ईखकी लेय ॥ जो
कहुतोसों अनरस करै, ताहि अधिक रस देय ॥ ९० ॥
ी, नरकी अरु नलनीरकी, गति एकी करि जोय ॥ ज्यों
गुज्यों नीचो है चलै, त्यों त्यों ऊंचो होय ॥ ९१ ॥

अथ पखाने ।

धदोहा—कैसे निबहैं निबल जन, करि सबलनसों गैर ॥
नि जैसे बस सागर विषे, करत मगरसों वैर ॥९२॥
ाथ अपनी पहुँच विचारकै, फिर तब करियै दौर ॥
८६ तेते पाँव पसारिये, जेती लांबी सौर ॥ ९३ ॥
पिशुन छल्यो नर सुजनसों, करत विश्वास न
श्र चूकि ॥ जैसे दाध्यो दूधको, पिवत छांछको
हि फूंकि ॥ ९४ ॥ फेर न ह्वैहै कपटसों, जो कीजै
जम्या, कभू ॥ जैसे हाँडी काठकी, चढै न दूजी
२

वार ॥ ९५ ॥ करिये सुखका होत दुख, यह कहौ कौन सयान ॥ वा सोनेको जारिये, जासों टूटै कान ॥ ९६ ॥ भले बुरे जहँ एकसे, तहां न बसियै जाय ॥ ज्यों अन्याय पुरमें बिकै, खल गुर एकै भाय ॥ ९७ ॥ भाव भावकी सिद्धि है, भाव भावमें भेव ॥ जो माने तो देव है, नहीं भीतको लेव ॥ ९८ ॥ अति अनीति लहिये न धन, ज्यों प्यारो मन होय ॥ पाये सोनेकी छुरी, पेट न मारे कोय ॥ ९९ ॥ मूरखको पोथी दई, बाचनको गुणगाथ ॥ जैसे निर्मल आरसी, दई अंधके हाथ ॥ १०० ॥ अति हठ मत कर हठ बढे, बात न करिहै कोय ॥ ज्यों ज्यों भीजै कामली, त्यों त्यों भारी होय ॥ १ ॥ लालचहूं ऐसो भलो, जासों पूजै आस ॥ चाटेहू कहुँ ओसके, बुझत काहुकी प्यास ॥ २ ॥ जैसो गुण दीनो दई, तैसो रूपनिबन्ध ॥ ये दोऊ कहँ पा

सुगन्ध ॥ ३ ॥ प्रेम निवाहन कठिन है, समझ कीजियो कोय ॥ भांग भषन है सुगम पै, लहर कठिनही होय ॥ ४ ॥ एक वस्तु गुण होत है, भिन्नप्रकृतिके भाय ॥ भटा एकको पित करे, करत एकको बाय ॥५॥ बिन स्वारथ कैसे सहै, कोऊ कडवे बैन ॥ लात खाय पुचकारिये जो, होय दुधारू धेन ॥ ६ ॥ करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय ॥ बोवै वृक्ष बबूरको, आम कहांते होय ॥ ७ ॥ होय बुराईते बुरौ, यह कीनो निरधार ॥ खाड खनेगा औरको, ताको कूप तयार ॥ ८ ॥ एक भेखके आसरे, जातिवरण छिप जात ॥ ज्यों हाथीके पांव-में, सबको पाँव समात ॥ ९ ॥ कन कन जोरे मन जुरे, खाते निबरै सोय ॥ बूंद बूंदसों घट भरै, टप-कत बीतै तोय ॥ १० ॥ श्रमहीसों सब मिलत है, विनश्रम मिलै न काहिं ॥ सीधी अंगुरिन घी जम्यो, कबहू निकरे नाहिं ॥ ११ ॥ होत न कारज

मो बिना, यहै कहै सो अयान ॥ जहाँ न कुक्कुट श-
ब्द तहँ, होत न कहा बिहान ॥ १२ ॥ यही बात
सबही कहैं, राजा करै सो न्याव ॥ ज्यों चौपरके
खेलमें, पाँसो परै सो दाव ॥ १३ ॥ परको अवगुण
देखिये, अपनो दृष्टि न होय ॥ करै उजेरो दीप पै,
तरे अंधेरो जोय ॥ १४ ॥ अपनी अपनी ठौरपर,
सबको लागै दाव ॥ जलमें गाडी नावपर, थल गाडी
पर नाव ॥ १५ ॥ सुख दिखाय दुख दीजिये,
खलसों लरियै काहि ॥ जो गुर दीनेही मरत, क्यों
विष दीजै ताहि ॥ १६ ॥ अनपूछेही जानिये, मूढ
देख मनमाहिं ॥ छलके औ फिर निष्कपट, पूरे
छलके नाहिं ॥ १७ ॥ बिनशत बार न लागही,
ओछे जनकी प्रीति ॥ अंबर डंबर सांझके, ज्यों
बालूकी भीति ॥ १८ ॥ कुल सुपूत जान्यो परै,
लखि सब लक्षण गात ॥ होनहार बिरवानके, होत
चीकने पात ॥ १९ ॥ जो धनवन्त सुदेय कछु, देइ

कहा धनहीन ॥ कहा निचोरै नग्न जन, न्हान सरोवर कौन ॥ १२० ॥ होत निबाहन आपनो, लीनें फिरै समाज ॥ चूहा बिल न समात है, पूँछ बांधिये छाज ॥ २१ ॥ बिना प्रयोजन भूलिहूं, कथियै नाहीं ठाट ॥ जानौ नहीं जा नगरको, ताकी पूछ न बाट ॥ २२ ॥ रंगत औ आकारतें, जान लेत जो भेट ॥ तासों बात दुरै नहीं, ज्यौं दाईसों पेट ॥ २३ ॥ आप कहै नाहिन करै, ताको है यह हेत ॥ आप न जावै सासरे, औरंनको सिख देत ॥ २४ ॥ जो करिये सो कीजियै, पहले कर निरधार ॥ पानी पी घर पूछवो, नाहिन भला विचार ॥ २५ ॥ पीछे कारज कीजियै, पहले यतन विचार ॥ बडे कहत हैं बांधियै, पानी पहले पार ॥ २६ ॥ ठीक किये बिन औरकी, बात सांच मत थपं ॥ होत अंधेरी रैनमें, परी जेवरी सर्प ॥ २७ ॥ झूठ बिना फीकी लगै, अधिक झूठ दुखभौन ॥ झूठ

तितोही बोलिये, जों आटेमें लोन ॥ २८ ॥ ठौर देखके हूजिये, कुटिल सरल गति आप॥ बाहर टेढो फिरत है, बांबी सूधो सांप ॥ २९ ॥ दाऊ चाहें मिलनको, तो मिलाप निरधार॥ कबहूं नाहिन बाजि है, एक हातते तार॥१३०॥ आप अकारज आपनो, करत कुसंगतसाथ ॥ पाँय कुल्हारी देत है, मूरख अपने हाथ ॥ ३१ ॥ ताहीको करियै यतन, रहियें जाकी आर ॥ कौन बैठके डारपर, काटे सोई डार ॥ ३२ ॥ परतक्ष नीके देखियै, कहा बरणे कोउ ताहि ॥ कर कंकनको आरसी, को देखतहै चाहि ॥३३॥ आये आदर ना करै, जात रहै पछताय ॥ घर आयो नाग न पूजियै, बांबी पूजन जाय ॥ ३४ ॥ निबल सबलके पक्षतें, सबलनसों अनखात ॥ देत वृतासुरकी गधी, ऐरावतिके लात ॥ ३५ ॥ बहुत द्रव्य संचय जहां, चोर राज भय होय ॥ कांसे ऊपर बीजरी, परत कहत सब

कोय ॥ ३६ ॥ ओछे नरके पेटमें, रहै न मोटी बात ॥ आधसेरके पात्रमें, कैसे सेर समात ॥ ३७ ॥ तरसेहू परसे नहिं, नौढा रहत उदास ॥ जो सर सूखा भादवे, किसी उन्हाले आस ॥ ३८ ॥ हिलन मिलन चितवन मिटि, वय बीते करतूत ॥ योगी था सो उठ गया, आसन रही बिभूत ॥ ३९ ॥ मिलन चले आये बहुरि, तउ न रही तिय चित्त ॥ कांधे डाली कामली, योगी काको मित्त ॥ १४० ॥ तजिकै सुन्दर चतुरापिय, बिरझे अनत बसाय ॥ कूकर चौक चढाइयै, चाकी चाटन जाय ॥ ४१ ॥ निरखि प्रात प्रिय सौति वश, रही प्रीति हित हार ॥ लेय परोसन झोपरो, नित उठि करती रार ॥ ४२ ॥ वय रति गति मति चाह बिन, पियरिझवनकी बाक ॥ धोबी बेटा चांदसा, सींटी और पटाक ॥ ४३ ॥ रूठ्यो पिय सौतिनि मिल्यो, सखिहि खिजत कर मान ॥ ना वश चलत कुम्हारसों

खरका मीचत कान ॥ ४४ ॥ पिय बुलवन पठई सखी, रहि बैठी सुख लेय ॥ चोरौ कुतिया मिल गई, पहरौ काको देय ॥ ४५ ॥ सब सुख दै पिय हित करै, तऊ न रहै तिय नीति ॥ भुस ऊरपको लीपबो, अरु बालूकी भीति ॥ ४६ ॥ पिय औरै चितवन चलन, घरतियसों नहिं लेस ॥ जैसे कंथा घर रहै, तैसे गये विदेस ॥ ४७ ॥ वय बीते आये बरन, अब न लहत चित चाय ॥ बीत्यो व्याह कुम्हारको, भांडा लै लै जाय ॥ ४८ ॥ पीव परोसिनते रहत, तिय न कहत डर काज ॥ अपनी जांघ उघारिये, आपहि मरिये लाज ॥ ४९ ॥ सौतिन कोउ वियोगिनी, पियते भयो बियोग ॥ जिहिं घर जितो बधावनो, तिहि घर तितनो सोग ॥ ५० ॥ तिय बैठी मन सकुचकै, पिय आये नहि चाय ॥ सूने घरको पाहुनो, ज्यों आवै त्यों जाय ॥ ५१ ॥ सुख बिलसै यौवन समै, फिर

पछतावत बाल ॥ गई बास वोदारकी, रही खालकी खाल ॥ ५२ ॥ सौति लरी पियपे गई, वहाँ रह्यो रिस पाग ॥ घरकी दाधी बन गई, बनमें लागी आग ॥ ५३ ॥ पाँय पलोटत द्वै तिया, द्वै तिय सोवत साथ ॥ इक द्वै द्वै अरु चिकानि पुनि, लाडू दोऊ हाथ ॥ ५४ ॥ पिय आये यौवन बिते, बहुरो चले बिदेस ॥ दोनो खोई जोबना, मुद्रा औ आदेस ॥ ५५ ॥ अद्भुत हित प्रीतम प्रिया, सौतिन जानत सार ॥ काजर सब कोउ देत है, चितवनमाहिं विचार ॥ ५६ ॥ नौढा प्रौढासों कहत, हौं जानत रसघात ॥ कूआँमेंकी मेंडुकी, कहे समुद्रकी बात ॥ ५७ ॥ सौति आज टोना कियो, हौं न कहौंगी सोय ॥ महतो दुरो पयारमें, को काहि वैरी होय ॥ ५८ ॥ सौति बात मीठी कहत, तऊ सौति सतराय ॥ सोगाहा सूऔ पढै, अंत बिलाई खाय ॥ ५९ ॥ अली लई सँग टहलको, करन लगी रसरास ॥ गाडर आ-

नी ऊनको, बैठी चरै कपास ॥ १६० ॥ सौति प्रीति जोरत रहै, दुलहन देत उठाय ॥ आंधी बाटै जेवरी, पीछे बकरी खाय ॥ ६१ ॥ जोबनलौं तिय रस रमी, बीते भयो बियोग ॥ कोल्हूंसों खल ऊतरी, भई पलीता जोग ॥ ६२ ॥ मान मनाये बिन कहत, आव खेल हँस बोल ॥ बनिक हाठ बैठन न दे, कहे झुकतोसो तोल ॥ ६३ ॥ नौढासों अति रति करि, सोन कहत रतिचाव ॥ मोजामेंके घावको, पाजामेके राव ॥ ६४ ॥ अधिक मानते तिय तजी, पिय न मिले हित जोड ॥ ॥ बनजारेकी आग ज्यों, गयो बलती छोड ॥ ६५ ॥ शुचि नायक शुचि तिय रमैं, अशुचि न हिये समाय ॥ कै हंसा मोती चुगै, कै लंघन रह जाय ॥ ६६ ॥ कबहुं न हँसिकै कुच गहै, रिसकै गहे न केस ॥ जैसे कंथा घर रहै, तैसे गये बिदेस ॥ ६७ ॥

प्रेम ।

भूत लगे मदिरा पिये, सब काहू सुध होय ॥ प्रेमसुधारस जिन पियो, तिन न रहै सुध कोय ॥ ६८ ॥ अद्भुत पैंडो प्रेमको, न्याय कहत सब कोय ॥ नैननिसों नैना मिले, घाव करेजे होय ॥ ६९ ॥ जे घट बिरह अँवा अगन, परपक भये सुभाय ॥ तिनहीं घटमें नंदभन, प्रेमअमी ठहराय ॥ १७० ॥ जब विछुरत तब होत दुख, मिलकै हियो सिराय ॥ याहीमें रस द्वै भये, प्रेम कह्यो क्यों जाय ॥ ७१ ॥ जबलग मतके बीच कछु, स्वारथको रस होय ॥ शुद्ध सुधा कैसे कहै, परै बीचमें तोय ॥ ७२ ॥ मन मतंग मदरस मत्यो, घऱ्यो प्रेम रण धाय ॥ लोक वेद कुलकानकी, दई सैन बिचलाय ॥ ७३ ॥ नीको बिरह समीपते, जामें मिलनाकि आस ॥ कहिये भलो संयोग क्यों, जामें बिछुरन त्रास ॥ ७४ ॥ प्रीति न

टूटै अन मिले, उत्तम मनकी लाग ॥ सौ जुग पानीमें रहै, मिटै न चकमक आग ॥ ७५ ॥

नेत्र ।

अमी हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार ॥ जियत मरत झुक झुक परत, जिहि चितवत इक बार ॥ ७६ ॥ दौरत काहू औरके, थकै न कोऊ और ॥ मेरे दृगपै थकि रहे, देखत पिय दृग दौर ॥ ७७ ॥ प्यारी दृग अंजन दिये, यहै लुकंजन होय ॥ आय हिये मन लै गई, देख सकयो नहिं कोय ॥ ७८ ॥ नैन सलोने अधर मधु, कह रहीम घट कौन ॥ मीठो भावै लौनपर, मीठेहू पर लौन ॥ ७९ ॥ मन राखौ हौं बरजकै, जिय राखौं सम-झाय ॥ नैना बरजे ना रहैं, मिलें अगाऊ जाय ॥ १८० ॥ जब बरजे तब ना रहे, गये प्रेमरस लेन ॥ अपवशतें परवश भये, ये बिसवासी

नैन ॥८१॥ पल न लगत है एक पल, छिन न घटत्त घट सांस ॥ साहस मन जबते चुभी, नैनसैनकी फाँस ॥ ८२ ॥ समझाये समझत नहीं, पलक देत हिं चैन ॥ नीर भरे प्यासे रहैं, निपट अनोखे नैन ॥ ८३॥ पियमूरति चितलायकै, अब लावै ये नैन ॥ वैरी आग लगायकै, दौरे पानी लैन ॥ ८४ ॥ प्यारे नैननकी कथन, कैसे कहौं कबित्त ॥ खिनक साह खिन चोरटा, खिन वैरी खिन मित्त ॥ ८५ ॥ अनियारे तीखे कुटिल, अंकुशसे दृगबान ॥ लागत सीधे आयके, पाछे खैंचें प्रान ॥ ८६ ॥ प्रीतम नैननमें गिरी, जिन नैननकी सैन ॥ फिर काढनको चाहिये, वेई तीखे नैन ॥ ८७ ॥ लटपट पग धर्ती धरै, अटपट बोलत्त बैन ॥ कछु पियसों खटपट भई, टपटप टपकत नैन ॥ ८८ ॥ पात झरंते इम कहैं, सुन तरुवर बनराय ॥ अबके बिछुरे कब मिलैं, दूर परैंगे जाय ॥ ८९ ॥ आलम ऐसी प्रीति

कर, ज्यों वारिज हित वार ॥ वह सूखे वह ना रहै, मिटै मूल दल डार ॥ १९० ॥ प्रीति जो सीखो ईखसों, जहां जु रसकी खान ॥ जहां गांठ तहँ रस नहीं, यही प्रीतिकी बान ॥ ९१ ॥ बेलरियां कुलवंतियां, नेहा ना चूकंत ॥ जित्थें कंठ बिलगियां, तित्थेंही सूकंत ॥ ९२ ॥ प्रीति जो ऐसी कीजिये, ज्यों निशि चंदा हेत ॥ शशि बिन निशि है सांवरी, निशि बिन चंदा सेत ॥ ९३ ॥ विपति बराबर सुख नहीं, जो थोरे दिन होइ ॥ इष्ट मित्र बंधू जिते, जान परैं सब कोइ ॥ ९४ ॥ नेह निबाहन कठिन है, फिऱ्यो जगत सब जोय ॥ विमल प्रीति नहिं देखिये, स्वारथ लग सब कोय ॥ ९५ ॥ प्रीति प्रीति सब कोउ कहै, कठिन तासुकी रीति ॥ आदि अंत निबहै नहीं, बारूकीसी भीति ॥ ९६ ॥ सहस्र डुबकी मैं लई, मुकुता कर नहिं लग ॥ सागरको कहा दोष है, बुरे हमारे भाग ॥ ९७ ॥

नवला निकसी तीर जब, नीर चुवत बरबीर ॥ मनु अँसुवन रोवत बसन, तउ बिछुरनकी पीर ॥ १८ ॥ अलकावलिमें देखिये, गोरे मुखकी जोय ॥ जो रूखनिमें चांदनी, झिलमिल झिल-मिल होय ॥ १९ ॥ मुकुता तियके कानमें, का गुण सदा कँपाय ॥ तिरछी चितवनते डरै, मत फिर वेध्यो जाय ॥ २०० ॥ रोमावलि हियरे सखी, नाहिंन एरी नाहिं ॥ श्यामध्यान हिरदे बसे, ताकी है परछाहिं ॥ १ ॥ चुंबनसमय जु नासिका, बेसरमुतिय डुलाय ॥ अधर छुडावत पीयपै, मानो हाहा खाय ॥ २ ॥ तिल चारो पानिप सलिल, अलक फंद बलि च्वार ॥ मन पक्षी गहि गहि किते, डारे श्रवणपिटार ॥ ३ ॥ गुंजा ऐसे हो रहे, मुकुता बेसर बाल ॥ नैन औरके श्याम सब, अधर ओरके लाल ॥ ४ ॥ जबते मो ऊपर पडी, श्याम सलोनी जोति ॥ लौनी लागे भीत जे, देह दूबरी

होति ॥५॥ गोरे मुखपर श्याम तिल, ऐंच लियो जिय मोर ॥ नेही कैसे बच रहै, परै चांदनी चोर ॥ ६ ॥ फेंटा चले छिंडायकै, निबल जान पिय मोहिं ॥ मनकी लगन छुँडायहो, तौ बलि बदिहौं तोहिं ॥ ७ ॥ गौनसमय फेंटा गह्यो, सुन्दर हित जिय जान ॥ छूटतही दोऊ छुटे, उत फेंटा इत प्रान ॥ ८ ॥ गौनसमय फेंटा गह्यो, छांड जु कह्यो सुजान ॥ पीउ पिया रे कहौ तुम, फेंटा तजूं कि प्रान ॥ ९ ॥ आज सखी हम इम सुन्यो, पहु फाटत पियगौन ॥ पहु अरु हियरे होड है, पहले फाटै कौन ॥ २१० ॥ बाला प्रथम बियोगनी, घरही घर पूछंत ॥ बलम पयाने ऐ सखी, बल याहू बाढंत ॥ ११ ॥ बिरहघटा कौंधा सुरत, छिन छिन कौंधत आहि ॥ नैन नीर बरषा लगी, गरजन आहिं कराहि ॥ १२ ॥ सूनो भवन बिदेश पिय, उसासि सास तिय लेति ॥ सूरति आवै ध्यानमें,

उठ उठ आदर देति ॥ १३ ॥ आजै द्वैज विदेश पिय, शशि निकऱ्यो इहि ओर ॥ मम नयना अरु पीयके, आय भये इक ठौर ॥ १४ ॥ उन बिन सब ऋतु फिर गईं, देख दिननके फेर ॥ जेठ भिजोईं आंसुवन, सावन जारी घेर ॥ १५ ॥ प्रीतम तुम्हरे दरशको, रह्यो अधर जिय आय ॥ अब कह आज्ञा होति है, रहैं कि फिर घट जाय ॥ १६ ॥ मो मन मनसा इम हुती, जन्म न छांडौं पाय ॥ बिछुरन अंकजु विधि लिख्यो, तासों कहा बसाय ॥ १७ ॥ मुख ग्रीषम पावस नयन, जियमाहियां जडकाल ॥ पिय बिन तनुतें तीन ऋतु, कबहुँ न मिटति जमाल ॥ १८ ॥ जबलग हियमें धर सकी, तबलग धरी जु धीर ॥ मीरन अब कैसी बनै, अधिक पिरानी पीर ॥ १९ ॥ मन बहलावत दिन गयो, महाकठिन है रैन ॥ कहां करौं कैसे भरौं, विन देखे नहिं चैन ॥ २२० ॥ खिन बैठै खिन उठि चलै, खिन खिन

ठाढी होय ॥ घायलसी घूमति फिरै, मरम न जानै कोय ॥ २१ ॥ साहस तन मन ज्ञान गुन, सबै गये पियसंग ॥ चितवन दामिनिसी गिरी, भस्म कियो जिन अंग ॥ २२ ॥ विरहहि लोयनमें रहत, तिय विन नीर गंभीर ॥ मीन रहत सब नीरमें, इन मीननमें नीर ॥ २३ ॥ रेती विरहसमुद्रमें, हौं जहाज ईकंत ॥ तन मन जोबन डूबियो, प्रेमध्वजा फहरंत ॥ २४ ॥ रोम रोम बूंदें चुवें, लोग प्रस्वेद कहंत ॥ सजनी सजनवियोगतें, सब तन रुदन करंत ॥ २५ ॥ पिय बिछुरत बिछुरे सबै, तन मनके सुख चैन ॥ घर बाहर न सुहात कछु, तलफ कटै दिन रैन ॥ ॥ २६ ॥ साजन इक दिन वे हुते, बिच न सुहाते हार ॥ वाछु जो कोऊ फिर गई, अब बिच परे पहार ॥२७॥ सोरठा ॥ बुध विद्या गुण ज्ञान, प्रेम चाव औ हर्षबल ॥ ये तजि होहिं अयान, जिहि घट विरहा संचरै ॥२८॥ दोहा ॥ काल-

छूटते कठिन है, जो व्यापै उर लाल ॥ जम नेरे आवैं नहीं, बिरह कालको काल ॥ २९ ॥ तन दुख मन दुख नैन दुख, हियो भयो दुखखान ॥ मानो कबहूं ना हुती, वा सुखसों पहँचान ॥ ३० ॥ रूप सयानप चातुरी, सबै गईं पिय साथ ॥ देखो सखी जु रह गई, एक बौरई हाथ ॥ ३१ ॥ हौं सजनी जानति नहीं, पिय बिछुरनको सार ॥ जिय बिछुरनते कठिन है, पिय बिछुरनकी बार ॥ ३२ ॥ हौं सजनी जानति नहीं, बिछुरी भूले भाय ॥ अबकी बेर जो फिर मिलौं, जन्म न छाँडों पाय ॥ ३३ ॥ अहमद गति अवतातकी, कहत सबै संसार ॥ बिछुरे मानुष फिर मिलै, यहै जान अवतार ॥३४॥ बिरह तपनि अतिही कठिन, जानत है सब कोय ॥ देख पतंगा आगिको, जरिकै शीतल होय ॥ ३५ ॥ बिरह दही पाति घट गई, तपति न तऊ सिराय ॥ भरै धरै शिर गागरी, रीती व्है व्है

जाय ॥ ३६ ॥ मीरन बिछुरतही पिया, उलट गयो संसार ॥ चंदन चंदा चांदनी, भये जरावनहार ॥ ३७॥ तुम विन एती को करै, कृपा जु मेरे नाथ ॥ मोहिं अकेली जानकै, दुख राख्यो है साथ ॥३८॥ मीरन प्यारे इमि कह्यो, सपने देखो मोहिं ॥ तुम विन नींद न आवही, कैसे देखों तोहिं ॥ ३९ ॥ प्यारे मेरी नींदकी, बात तिहारे हाथ ॥ आवति है तुम साथही, गई तिहारे साथ ॥ ४० ॥ एकौ दुख निबरयो नहीं, दूजो पहुँच्यो आय ॥ हियो कहै कै पुलक हों, दुखकी किधों सराय ॥४१॥ कहा करौं परगट नहीं, लगती तोसों घात॥ प्यारे सपने मांझ है, मेरी तेरी बात ॥ ४२ ॥ प्रीतम प्यारेके बिरह, नागिनिसी यह रैन ॥ लांबी कारी विष भरी, देख भग्यो है चैन ॥ ४३ ॥ घरी पहरसी पहर दिन, दिन भो वरससमान ॥ छिन छिन दुबरी बिन मिले, मोहिं तिहारी आन ॥४४॥

लाल पियाके बिछुरते, बिछुर गये सब चैन ॥ भूख प्यास नींदौ गई, ऊर्द्ध बाहु भये नैन ॥ ४५ ॥ जबलग चख मारग पिया, आन कियो अब सेर ॥ तबलग हियमें हे सखी, हौंसनिके भये ढेर ॥ ४६ ॥ प्रीतम तुव गुण बेलरी, पसरी मो उर-माहिं ॥ नेहनीरसौं नित बढे, क्यों हूं सूखत नाहिं ॥ ४७ ॥ प्रीतमको संदेसरा, कहत हियो रूँधि-आय ॥ सूधे बात न आवही, योंही कहियो जाय ॥ ४८॥ प्रीतमको पतियां लिखो, लिखत लिखी भर ताव ॥ वामें औरकछू नहीं, कै हाहा कै आव ॥४९॥ कर कांपत पतियां लिखत, जल भरि आवत नैन ॥ कोरो कागज हाथ दै, मुखही कहियो बैन ॥२५०॥ कागज भीजत नयनजल, कर कांपत मसि लेत ॥ पापी विरहा मन बसत, बिथा लिखन नहिं देत ॥ ५१ ॥ तुम बिछुरत छिनमें मरौं, कहा जियौं बिन तोहिं ॥ तुम मूरति मो मन बसै, वहै जिया-

वत मोहिं ॥ ५२ ॥ लिखन पढनकी है नहीं, कही सुनी नहिं जात ॥ अपने जियते जानियो, मेरे जीकी बात ॥ ५३ ॥ इहि गुण पतियां ना लिखौं, धरे रहौं मन मौन ॥ तुम प्रीतम जियमें बसौ, पोथी बाँचै कौन ॥ ५४ ॥ पतियां ताहि पठाइये, जो साजन परदेश ॥ निशि दिन हियरेमें बसै, ताको कहा सँदेश ॥ ५५ ॥ बायस राह भुजंग रह, लिखत तिया ततकाल ॥ लिख लिख पोंछति फिर लिखति, कारन कौन जमाल ॥ ५६ ॥ प्रीतम तुम मत जानिये, भयो दूरको बास ॥ देह गेह कितहूं रहै, प्राण तिहारे पास ॥ ५७ ॥ मन माला तुव नामकी, जपत रहै दिन रैन ॥ नयन पियासे दरशके, नेक न पावैं चैन ॥ ५८ ॥ वासर भूषन नींद निशि, चित चिंता पिय तोरि ॥ लोयन गंगतरंगगति, उठत हिलोर हिलोरि ॥ ५९ ॥ पाती लिखन संदेश तहँ, जहँ न पहुँचिये आप ॥ प्रीतिलुकंजन आंजके, करियै

मीत मिलाप ॥ २६० ॥ मन चाहत हैं मिलनको,
सुख देखनको नैन ॥ श्रवणजु चाहत हैं सुन्यो,
पिय प्यारेके बैन ॥६१॥ करकमलन पाँती लिखी,
प्यारी चतुर सुजान ॥ इक इक अक्षरपै सखी,
वारौं तन मन प्रान ॥ ६२ ॥ मेरो मन तोमें रह्यो,
तेरो मन मोमांहिं ॥ दोऊ व्याकुल बिन मिले, चैन
शरीरहि नाहिं ॥ ६३ ॥ तेरो मेरो एक मन, देखि-
यत दोय शरीर ॥ बानजु मारै काम इक, होत
दुहुँनको पीर ॥ ६४ ॥ मसि लेखन कागज नहीं,
समाचार है मौन ॥ अब हम तुम एकै भये, लिखै
कौनको कौन ॥ ६५ ॥ नादशब्दमें वश कियो,
माँस बेच धन लेहु ॥ मृगछाला पर गाइयो, यह
मांगों मुहि देहु ॥ ६६ ॥ मृगई चितयो मृग्गतन,
लहे अहेरी घात ॥ मिलन रसोंई रावरे, त्वचा
तपिनके गात ॥ ६७ ॥ दधिसुत अबला अधरपर,
शोभाते लटकंत ॥ मानो मुजा सिकंदरी, पंथी

मने करंत ॥ ६८ ॥ तनु समुद्र मन लहर है, रूप कहर दरियाव ॥ मानौ भुजा सिकंदरी, पंथी यहां न आव ॥ ६९ ॥ अपने २ कर थपैं, लिख पूजत तिय भीत ॥ सकल फलै मन कामना, तुलसी प्रेम प्रतीत ॥ ॥ २७० ॥ तुलसी जहां विवेक नहीं, तहां न कीजे बास ॥ श्वेत श्वेत सब एकसे, करर कशा कपास ॥ ७१ ॥ रामनाम आराधवो, तुलसी वृथा न जाय ॥ लरकाईको पैरबो, आगे होत सहाय ॥ ७२ ॥ जिमि पनहारी जेवरी, खैंचत कटै पषान ॥ तुलसी रसना राम कहु, पाप कितिक अनुमान ॥ ७३ ॥ तुलसी रसना तौ भली, जो तूं सुमिरै राम ॥ नातर काढि निकासिये, मुखमें भलो न चाम ॥ ७४ ॥ तुलसी बिलम न कीजिये, भज लीजे रघुवीर ॥ तन तरकसते जात है, श्वास सारखे तीर ॥ ७५ ॥ एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ॥ जो गहि

सेवै मूलको, फूलै फलै अघाय ॥ ७६ ॥ स्वारथ सीताराम हैं, परमारथ सियराम ॥ तुलसी तेरो दूसरे, द्वार कहा है काम ॥ ७७ ॥ स्वारथ परमारथ सुलभ, सकल एकही ओर ॥ द्वार दूसरे दीनता, उचित न तुलसी तोर ॥ ७८ ॥ तुलसी सोई चतुरता, रामचरण लवलीन ॥ परमन परधन हरनको, वेश्या बडी प्रवीन ॥ ७९ ॥ चतुराई चूल्हे परो, ज्ञानी जनके भाय ॥ तुलसी रामसों प्रेम नहीं, सो जर मूल नशाय ॥ २८० ॥ मोर मोर सब कोउ कहत, तूको कह निज नाम ॥ कै चुप साधै सुनि समुझि, कै तुलसी भज राम ॥ ८१ ॥ तुलसी अपने रामको, रीझ भजो कै खीज ॥ खेत परेते जामि हैं, उलटे सीधे बीज ॥८२॥ सी कहते सुख ऊपजे, ता कहते तमनास ॥ तुलसी सीता जो कहत, राम न छाँडत पास ॥ ८३ ॥ तुलसी अघ सब दूर गे, रा अक्षरके लेत ॥

फिर नेरे आवत नहीं, मा अक्षर पढ देत ॥ ८४ ॥
आप आपनेते अधिक, जिहिं प्रिय सीताराम ॥
तुलसी ताके पग तरे, मेरे तनुको चाम ॥ ८५ ॥
तुलसी जाके रामसो, नाहिंन सहज सनेह ॥ मूंड
मुडायो ही वृथा, भांड भये तजि गेह ॥ ८६ ॥
मूंड उघारन किन कह्यो, बरज रहे प्रिय लोग ॥
घरही सती कहावती, जरती नाहवियोग ॥ ८७ ॥
यथालाभ संतोष सुख, रघुपतिचरण सनेह ॥
तुलसी जो मन हाथ है, जस कानन तस गेह ॥८८॥
प्रीति रामपद नीतिपथ, चलै राजरस जीति ॥
तुलसी संतनके मते, यही भक्तिकी रीति ॥ ८९ ॥
तुलसी खोटे दासको रघुपति राखत मान ॥
जो मूरख उपरोहितहिं, देत दान यजमान
॥ २९० ॥ काहूके धन धाम है, काहूके परिवार ॥
तुलसी ऐसे दीनके, सीताराम अधार ॥ ९१ ॥
नहिं सेवा नहिं बुद्धिबल, नाहिं विद्या नाहिं नाम ॥

तुलसी पतित पतंगकी, तू पति राखै राम
॥ ९२ ॥ एक भरोसे रामके, किये पाप भर
मोट ॥ जैसे नारि कुनारिकौ, बडी खसमकी ओट
॥९३॥ तुलसी छलबल छांडिकै, करिये रामसनेह॥
अंतर कहा भरतारसो, जिन देखी सब देह ॥९४॥
सब देखे परखे लखे, बहुत कहे कहा होय॥ तुलसी
सीताराम बिन, अपनो नाहीं कोय ॥ ९५ ॥ व्हे
अधीन याचै नहीं, शीश नाय नहिं लेय ॥ तुलसी
मानी याचकहि, बिन रघुवर को देय ॥ ९६ ॥
गंगा यमुना सरस्वाति, वहत समुद्र भरपूर ॥ तुलसी
चातकके मते, विना स्वाति सब धूर ॥ ९७ ॥
एक भरोसो एक बल, एक आश विश्वास ॥
स्वातिबूंद रघुनाथ है, चातक तुलसीदास ॥ ९८ ॥
ज्यों कामीके चित्तमें, चढी रहत नित बाम ॥ ऐसे
हो कब लागिहौ, तुलसीके मन राम ॥ ९९ ॥ ज्यों
गरीबकी देहमें, माघ पूसको घाम ॥ ऐसे हो कब

लागिहो, तुलसीके मन राम ॥ ३०० ॥ तीन टूक कोपीनके, अरु भाजी बिन नोन ॥ तुलसी रघुवर उर बसे, इन्द्र बापुरो कौन ॥ १ ॥ गुण स्वरूप बल द्रव्यके, प्रीति करै सब कोय ॥ तुलसी प्रीति सराहिये, इनते बाहर होय ॥ २ ॥ मीन काट जल धोइये, खाये अधिक पियास ॥ तुलसी प्रीति सराहिये, मुये मीतकी आस ॥ ३ ॥ कहा कहैं छवि आजकी, भले बने हो नाथ ॥ तुलसी मस्तक तब नवै, धनुष बाण लो हाथ ॥ ४ ॥ मुरली मुकुट दुरायकै, नाथ भये रघुनाथ ॥ तुलसी रुचि लखि दासकी, धनुष बाण लियो हाथ ॥ ५ ॥ पशू गढंते नर भयो, भूले सिंग अरु पूंछ ॥ तुलसी हरिकी भक्ति बिन, धृक् डाढी अरु मूंछ ॥ ६ ॥ प्रभुताको सब कोउ चहै, प्रभुको चहै न कोय ॥ जो तुलसी प्रभुको चहै, आजहि प्रभुता होय ॥ ७ ॥ तुलसी घरके घेरमें, घरी घरी तन छीन ॥ कबहूं ना वन

वन फिरे, कर करवा कोपीन ॥ ८ ॥ घरके घूमर घेरमें, रामचरण लवलीन ॥ तुलसी ऐसे संतको, कहा करवा कोपीन ॥ ९ ॥ काम क्रोध मद लोभकी, जबलग मनमें खान ॥ तबलग पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान ॥ ३१० ॥ तुलसी या जग आयकै, कौन भयो समरत्थ ॥ इक कंचन अरु कुचनको, किन न पसारे हत्थ ॥ ११ ॥ मन राखत वैरागमें, घरमें राखत रांड ॥ तुलसी किरवा नीमको, चारव्यो चाहत खांड ॥ १२ ॥ जबलगि अंकुश शीशपर, तबलग निर्मल देह ॥ तुलसी अंकुश वाहिरे, शिरपर डारत खेह ॥ १३ ॥ तुलसी काया खेत है, मनसा भयो किसान ॥ पाप पुण्य दोउ बीज हैं, बवै सु लुनै निदान ॥ १४ ॥ एक घडी आधी घडी, आधीहूमें आध ॥ तुलसी संगत साधकी, हरै कोटि अपराध ॥ १५ ॥ स्वामीते सेवक बडो, जो निज धर्मसमान ॥ राम बांधि उतरे

जलधि, कूद गये हनुमान ॥ १६ ॥ स्वामीको सेवक घने, सेवकको प्रभु एक ॥ तुलसी दोमें सो बडो, जाके मनमें टेक ॥ १७ ॥ तुलसी मनको मुकरहै, लखै सुलक्षण कोइ ॥ जैसो जाको भाव है, तैसो देखो सोइ ॥ १८ ॥ होत भलेके अनभलो, होत दानिके सूम ॥ होत कुपूत सुपूतके, ज्यों पावकमें धूम ॥१९॥ नीच निचाई ना तजे, साधनहूके संग ॥ तुलसी चंदनविटप बसि, बिन विष भोन भुजंग ॥ ३२० ॥ आसन दृढ आहार दृढ, सुमति ज्ञान दृढ होय ॥ तुलसी बिना उपासना, बिन दूलहकी जोय ॥ २१ ॥ तनु सुखाय पंजर करै, धरै रैनि दिन ध्यान ॥ तुलसी मिटै न बासना, बिना विचारे ज्ञान ॥ २२ ॥ आवतही हर्षै नहीं, नैनानि नहीं सनेह ॥ तुलसी तहाँ न जाइये, कंचन वरषै मेह ॥२३॥ हर्ष उठै आदर करै, आवत जान अतीत ॥ तुलसी तबही जानियै, परमेश्वरसो प्रीत ॥ २४ ॥

तुलसी या संसारमें, भांति भांतिके लोग ॥ हिलि-
यै मिलियै प्रेमसों, नदी नाव संयोग ॥ २५ ॥
तुलसी बिलम न कीजिये, मिलियै सबसे धाय ॥
को जाने किहि भेषमें, नारायण मिल जाय ॥ २६ ॥
तुलसी कहत पुकारकै, सुनौ सकल दे कान ॥
हेमदान गजदानते, बडो दान सन्मान ॥ २७ ॥ पर
सुख संपति देखि सुनि, जरहिं मूढ बिन आग ॥
तुलसी तिनके भाग तो, चलैं भलाई भाग ॥ २८ ॥
तुलसी कबहुँ न त्यागिये, अपने कुलकी रीति ॥
लायक हो सो कीजियै, ब्याह बैर अरु प्रीति ॥ २९ ॥
ज्ञान गरिबी हरिभजन, कोमल वचन अदोष ॥
तुलसी कबहुँ न छोडिये, क्षमा शील संतोष
॥ ३३० ॥ तुलसी सुपुरुष सेइयै, जब तब आवहि
काम ॥ लंक बिभीषणको दई, बडे दुचितमें
राम ॥ ३१ ॥ तुलसी निज कीरति चहै, परकी
कीरति खोय ॥ तिनके मुख मसि लागिहै, मिटै न

मरिहै धोय ॥ ३२ ॥ बहुत गईं आनंदसो, रही नेकसी आय ॥ तुलसी चिंता मति करै, श्रीरघुनाथ सहाय ॥ ३३ ॥ तुलसी जगमें आयकै, कर लीजे दो काम ॥ देवेको टुकडा भला, लेवेको हरिनाम ॥ ३४ ॥ तुलसी या संसारमें, पंच रत्न हैं सार ॥ साधुमिलन अरु हरिभजन, दया दीन उपकार ॥ ३५ ॥ बैरसनेह सयानको, तुलसी जो नहिं जान ॥ सो कि प्रेममग धरत पग, पशु बिन पूंछ बखान ॥ ३६ ॥ तुलसी तृण जल कूलको, निर्धन निपट निकाज ॥ कै राखै कै सँग चलै, बांह गहेकी लाज ॥ ३७ ॥ लिख लिख लिख सब जग लिख्यो, पढि पढि पढि कहा कीन्ह ॥ बढि बढि बढि घट बढ गये, तुलसी राम न चीन्ह ॥ ३८ ॥

अथ श्लेष ।

पीव कचौरीही सिखी, पूरी परती नाहिं ॥ मन लडुआ करती फिरी, विरहदही मनमाहिं ॥ ३९ ॥

कचौरी पिय ऐ सखी, पकौरी पिय नाहिं ॥ बराबरी कैसे करों, पूरी परै कि जाहिं ॥ ३४० ॥ सोरठा ॥ कीकर पाकर तार, जामन फलसा आमला ॥ सेव कदम कचनार, पीपल रत्ती तू न तज ॥ ४१ ॥ दो०— अमली बरसों हो रहीं, पीपर पास न जाउँ ॥ जा मुनि भेद न पावहीं, तासों मैं इठलाउँ ॥४२॥ करना फल्यो हे सखीसु, पी बिन क्या जरना ॥ जो प्रीतम करना यहै, तो जलि क्या करना ॥ ४३ ॥ नारंगी हौं पीयसों, यह अनारि पर मोहिं ॥ जो मैं पीवै सेवती, सदा सदा फल होहि ॥ ४४ ॥ तो ताकत निशि दिन रहौं, तू तो निपट अजान ॥ लाल कहै सो कीजियै, तज मैंनाकी बान ॥ ४५ ॥ सूख छुहारा तन भया, गिरी परै सब देह ॥ किस मिस लिखूं सँदेशरा, नौ जुलगौ यह नेह ॥ ४६ ॥ करछुई बरटोई नहीं, तवा टोकनी नाहिं ॥ चौके गये वे थारियां, रसन रसोई माहिं ॥ ४७ ॥ पालक

लेने हौं गई,, पिय सोया पाया ॥ मैथी निपट अजान, लाल मैं चूक जगाया ॥ ४८ ॥

अथ प्रश्नोत्तर।

कहा न अबला करि सके, कहा न सिंधु समाय ॥ कहा न पावकमें जरै, काल काहि नहिं खाय ॥ ४९ ॥ सुत नहिं अबला करि सकैं, मन नाहिं सिंधु समाय ॥ धर्म न पावकमें जरै, नाम काल नाहिं खाय ॥ ३६० ॥ प्रीतम या कलि-कालमें, कह ऐसो को आहि ॥ एक वस्तु जिहि सौंपिये, दे दश गुण करि ताहि ॥ ६१ ॥ सुनो अर्थ मनमोहिनी, है यह यह धरा सुभाइ ॥ बोये एके बीजके, दे दशगुण करि ताहि ॥ ६२ ॥ ऐसो बहुभख कौन है, खात जु नाहिं अघाय ॥ खात खात भोजन घटै तब आपहि मरजाय ॥ ६३ ॥ बहुभख ज्वाला जानिये, तृण लकरी बहु खाय ॥ जब भोजन घटजात है, तब सीरी व्है जाय ॥६४॥

दृग मूंदे सब देखिये, कौन मुकुरसो ईठ ॥ जो चख खोल निहारियै, कछू न आवै दीठ ॥ ५५ ॥ वह स्वपनेको मुकुर है, सोवत सब दिखराय ॥ जागे कछु सूझे नहीं, जब दृग द्वय खुल जाय ॥ ५६ ॥ रहै भाकसीमें सदा, चिंता कछु न जनाय ॥ रुदन करै छूटै जबै, वाको नाम बताय ॥ ५७ ॥ बालक वाको नाम है, गर्भभाकसी जान ॥ जब निकसै तब रोय है, वाको यहैं बखान ॥ ५८ ॥ तिय बिगार नरशिर परै, नर बिगार शिर तीय ॥ ये चारों धों पूछियै, कहो शोच कै जीव ॥ ५९ ॥ मूँह बिगारति स्वाननी, नाम स्वानको लेइ ॥ हान करै मंजार त्यों, दोष मंजारी देइ ॥ ३६० ॥ न्यारे न्यारे पुरुष हैं, सकल होहिं इक ठाम ॥ तब सब कोऊ कहत हैं, उनको नारी नाम ॥ ६१ ॥ मनके तौ लौं पुरुष हैं, न्यारे न्यारे आहिं ॥ धागेमांहि परोइये, माला कहियै

त्ताहि ॥ ६२ ॥ न्यारी न्यारी नारि हैं, मिले पुरुष मनमाहिं ॥ तब तब कोउ नर भाखि हैं, नारी कहियत नाहिं ॥ ६३ ॥ अश्व अश्वनिइक संग है, जबहि कहत दल होय ॥ कहत सबै घोरा जुरे, घोरी कहत न कोय ॥ ६४ ॥

कुंडलिया ।

वैरी बँधुआ बानियां, ज्वारी चोर लबार ॥ व्यभिचारी रोगी ऋणी, नगरनारिको यार ॥ नगरनारिको यार भूलि परतीत न कीजै ॥ सौ सौ सौं हैं खाय चित्त एकौ नहिं दीजै ॥ कह गिरिधर कविराय घरै आवै अनगैरी ॥ हितकी कहै बनाय जानिये पूरो बैरी ॥ १ ॥ बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछिताय ॥ काम बिगारै आपनो, जगमें होत हँसाय ॥ जगमें होत हँसाय चित्तमें चैन न पावै ॥ खान पान सन्मान राग रँग मनहिं न आवै ॥

कह० दुःख कछु टरत न टारे ॥ खटकत है जिय-माँहिं कियो जो विना विचारे ॥ २ ॥ बीती ताहि बिसारदे, आगेकी सुध लेय ॥ जो बनि आवै सहजमें, ताहीमें चित देय ॥ ताहीमें चित देय बात जोई बनि आवै ॥ दुर्जन हँसै न कोय चित्तमें खेद न पावै ॥ कह० यहै कर मन परतीती ॥ आगेको सुख होय मुझे बीतीसो बीती ॥ ३ ॥ साँईं ये न वि-रुद्धिये, गुरु पंडित कवि यार ॥ बेटा वनिता पौरिया, यज्ञ करावनहार ॥ यज्ञ करावनहार राजमंत्री जो होई ॥ विप्र परोसी वैद्य आपको करै रसोई ॥ कह० इन्हें कैसे समझाई ॥ इन तरहते तरह दिये बनि आवै साँईं ॥ ४ ॥ साँईं अपने चित्तकी, भूल न कहियै कोय ॥ तबलग मनमें राखिये, जबलग कारज होय ॥ जबलग कारज होय भूल कबहूं नहिं कहियै ॥ दुरजनता तो होय आपसी रे व्है रहिये ॥ कह० बात चतुरनके ताँईं ॥ करतूती

कहि देति आप कहिये नहिं सांई ॥ ५ ॥ चिंता ज्वाल शरीर बन, दावा लगि लगि जाय ॥ प्रकट धुंआ नाहिं देखिये, उर अंतर धुंधुवाय ॥ उर अंतर धुंधवाय जरै ज्यो काचकी भट्टी ॥ जरिगो लोहू मांस रहगई हाडकी टट्टी ॥ कह० सुनौ हो मेरे मित्ता ॥ वे नर कैसे जियेजाहि तन व्यापै चिंता ॥ ६ ॥ राजाके दरबारमें, जैये समयो पाय ॥ जाय तहाँ नहिं बैठिये, जहँ कोउ देय उठाय ॥ जहँ कोउ देय उठाय बोल अनबोले रहिये ॥ हँसियै नाहिं हहाय बात पूछेते कहिये ॥ कह० समयसों कीजै काजा ॥ अति आतुर नहिं होय बहुरि अनखैहै राजा ॥ ७ ॥ कृतघन कबहुं न मानई, कोटि करौ जो कोय ॥ सरबस आगे राखियै, तऊ न अपनो होय ॥ तऊ न अपनो होय भलेकी भली न मानै ॥ काम काढि चुप रहै फेरि तिहिं नाहिं पिछानै ॥ कह गिरि० रहत नितहीं निर्भय मन ॥ मित्र शत्रु सब एक दामके लालच

कृतधन ॥ ८ ॥ जाकी धन धरती लई, ताहि न लीजै संग ॥ जो संग राखेही बनै, तो करि राख अपंग ॥ तौ करि राख अपंग फेर फरकै सो न कीजै॥ कपटरूप बतराय ताहिको मन हर लीजै ॥ कह० खुटक जैहै नहिं ताको ॥ कोटि दिलासा देउ लई धन धरती जाकी ॥ ९ ॥ सांई अपने भ्रातको, कबहुँ न दीजै त्रास ॥ पलक दूर नहिं कीजिये, सदा राखिये पास ॥ सदा राखिये पास त्रास कबहूँ नहिं दीजै ॥ त्रास दियो लंकेश ताहिकी गति सुनि लीजै ॥ कह० रामसों मिलिगो आई ॥ पाय बिभीषण राज्य लंकपति बाज्यो सांई ॥ १० ॥ सांई बेटा बापके, बिगरे भयो अकाज ॥ हिरणकुश अरु कंसको, गयो दुहुँनको राज ॥ गयो दुहुँनको राज बाप बेटाके बिगरे ॥ दुष्मन दावादार भये महिमंडल सिगरे ॥ कह० उन्हें काहू न बताई ॥ पिता पुत्रकी रारि लाभ एकौ नहिं साँई ॥ ११ ॥ सांई नदी समु-

द्रको, मिली बडपनो जानि ॥ जाति नाश भयो मिलतही, मान महतकी हानि ॥ मान महतकी हानि कहौ अब कैसी कीजै ॥ जल खारो ह्वै गयो ताहि कहु कैसे पीजै ॥ कह० कच्छ मच्छ न सकुचाईं ॥ बडो फजीहत चार भयो नदियनको साईं ॥ १२ ॥ सांईं सन अरु दुष्टजन, इनको यही स्वभाव ॥ खाल खिचावैं आपनी, परबंधनके दाव ॥ परबन्धनके दाव खाल अपनी खिंचवावैं ॥ मूँड काटिकैं कूटियै तऊ बाज न आवैं ॥ कह० जरै आपनी कठाईं ॥ जलमें गिरि सर गये तऊ छोडी न खुटाईं ॥ १३ ॥ सांईं समौ न चूकियै, यथाशक्ति उनमान ॥ को जाने को आय है, तेरि पौरि प्रभु मान ॥ तेरि पौरि प्रभु मान समौ असमौ ताकि आवै ॥ ताको तू मन खोलि अंक भरि कंठ लगावै ॥ कह० समैयामें सुधि आई ॥ शीतल जल फल फूल समौ जिन चूको सांईं ॥ १४ ॥ सांईं हरि ऐसी करी,

बलिके द्वारे जाय ॥ पहले हाथ पसारकै, बहुरि पसारे पाँय ॥ बहुरि पसारे पाँय मतो राजा न बतायो ॥ भूमि सबै हरि लई बाँधि पाताल पठायो ॥ कह० राव राजनिके ताईं ॥ छलबल करि परभूमि लेत को तृपत्यौ साँईं ॥ १९ ॥ साँईं पुर पाला परचो, आसमानते आय ॥ मगही आँधो छोंडिकै, पुरजन चले पराय ॥ पुरजन चले पराय अंध इक मतो बिचारचो ॥ पंग कंधके लियो दृष्टि वाकी पग धारचो ॥ कह० मते व्है चलियें भाईं ॥ विना मतेको राज्य गयो रावणको साँईं ॥ १६ ॥ सोना लेने पिव गये, सूनो कर गये देश ॥ सोना मिल्यौ न पिव फिरे, रूपा होयगे केश ॥ रूपा हो गये केश रूप सब रोय गँवायो ॥ घर बैठी पछताय कंथ अजहूं नहिं आयो ॥ कह० लोन बिन सब अलोना ॥ जब जोबन ढल जाय कहा लै करियै सोना ॥ १७ ॥ मोती लेने पिव गये, क्षारसमुद्रतीर ॥ मोती मिले न पिव

मिले, नयनन टपकत नीर ॥ नयनन टपकत नीर पीर अब कासों कहियै॥ बीते बारह मास पिया बिन घरही रहियै ॥ कह० सांझ डाराते सगनौती ॥ जर जाओ वह सिन्धु जहां उपजत है मोती॥१८॥हीरा अपनी खानको, मनहीं मन पछिताय ॥ गुण कीमत जाने नहीं, तहां बिकान्यो आय ॥ तहां बिकान्यो आय छेद कर कमरसों बांध्यो ॥ मांठो लगै नमांस लोन बिन फूहर रांध्यो ॥ कह० धरौं कैसे करि धीरा ॥ गुण कीमत घट गई यहै कहि रोयो हीरा ॥ १९ ॥ सांई अगर उजारमें, जरत महा पछताय ॥ गुणगाहक कोऊ नहीं, जाहि सुवास सुहाय ॥ जाहि सुवास सुहाय सुतौ वनमें कोउ नाहीं ॥ कै गीदड़कै हिरन सुतौ कछु जानत नाहीं ॥ कह० बडो दुख वहै गुसांई ॥ अगर आकक्की राख भई मिलि एकै साँई ॥ २० ॥ सांई हंस न आवहीं, बिन सरवर जल पास ॥ निर्फल तरुवरते डरै, पक्षी पथिक

उदास ॥ पक्षी पथिक उदास छाँह विश्राम न पावैं ॥ जहां न फूले कमल भ्रमर तहँ भूलन आवै ॥ कह० जहां यह बुझै बडाई ॥ तहां न करियै सांझ प्रातही चलियै सांई ॥ २१ ॥ हंसा उडि दिशिको चले, सरवर मीत जुहार ॥ हम तुम कबहूं भेंटि है, संदेश न व्यौहार ॥ संदेश न व्यौहार भऱ्यो पूरो जल रहियो ॥ जीव जंतु चिरजीव सदा उत्तम फल लहियो ॥ कह० कोलकी रही न शंसा ॥ दे अशीश उडि चले देश अपनेको हंसा ॥२२॥ हंसा यहँ रहियै नहीं, सरवर गयो सुखाय ॥ जो रहियै तौ शीशपर, बगुला देहैं पाँय ॥ बगुला देहैं पांय पंख कारे व्है जैहैं ॥ लोक हँसाई होय कहा कछु इज्जत पैहै ॥ कह० मोहि इक याही संसा ॥ याहूते कछु घाट औरहू है है हंसा ॥ २३ ॥ सांई एकै गिरि धऱ्यो, गिरिधर गिरिधर होय ॥ हनूमान बहु गिरि धरे, गिरिधर कहै न कोय ॥ गिरिधर कहै न कोय हनू द्रोणागिरि

लायो ॥ ताको तिनका टूट पऱ्यो सो कृष्ण उठायो ॥ कह० बडनकी बडी बडाई ॥ थोरेही यश होय यशी पुरुषनको सांई ॥ २४ ॥ नयना जब परवश परे, उत्तम गुण सब जाँय ॥ वे फिर फिर सीरी करें, ये फिर फिर लपटांय ॥ ये फिर फिर लपटाय नेत्र बहुरो भरि आवें ॥ खान पान सुख त्याग रात-दिनही दुख पावें ॥ कह० सुनौ तुम श्रवणनि बैना ॥ लोक जु देयँ कलंक परैं जब परवश नैना ॥ २५ ॥ साँई सुमन पलाशपर, सुआ रह्यो जो आय ॥ लालकलीसी चोंचपर, मधुकर बैठ्यो जाय ॥ मधुकर बैठ्यो जाय सुआ तत्काल चबायो ॥ कोटि कष्ट दुख पाय मरू करि छूट न पायो ॥ कह० बेन घर बजे बधाई ॥ दीजै बिदा पलाश जियत घर जैयै साँई ॥ २६ ॥ सांई तेली तिलनसों, कियो नेह निबाहि ॥ छांटि फटकि उज्ज्वल करे, दई बडाई ताहि ॥ दई बडाई ताहि पंच यह सिगरे

जानी ॥ दे कोल्हूमें फेरि करी है इकत्तर घानी ॥ कह० मया की यही बडाई ॥ अमया सबते भली मान तू मेरी सांई ॥ २७॥ सांई सुवा प्रवीन अति, वाणी वदत विचित्र ॥ रूपवन्त गुण आगरा, रामनामसों चित्त ॥ रामनामसों चित्त और देव न अनुराग्यो ॥ जहां जहां तू गयो तहां तू नीको लाग्यो ॥ कह० सुआ चूक्यो चतुराई ॥ सेमल सेयो वृथा विश्वास करि भूल्यो सांई ॥ २८ ॥ धोखे दाडिमके सुआ, गयो नारियर खान ॥ चोच टूटि पाई सजा, फिर लाग्यो पछतान ॥ फिर लाग्यो पछतान बुद्धि अपनीको रोयो ॥ निर्गुणियनके पास बैठी गुण अपनो खोयो ॥ कह० कहूँ जये नहिं ओखे ॥ चोच खटकै टूटि सुवा दाडिमके धोखे ॥ २९ ॥ गदहा थोरे दिननमें, खूंद खाय इतरात ॥ अफरान्यो मारन कहै, ऐरापतिके लात ॥ ऐरापतिके लात देत शंका नहिं आनै ॥ ऐराकी सह रहत ताहि

कोऊ नाहिं जानै ॥ कह० रहगी कौलौं दुवधा ॥ ऐरापतिकी लात फेर कैसे सैहै गदहा ॥ ३० ॥ महुआ नित उठ दाखसों, करत मसलहत आय ॥ हम तुम सूखे एकसे, हूजत हैं रसराय ॥ हूजत हैं रसराय विलग जिन याको मानो ॥ मधुर मिष्ट हम अधिक कछू जिन जियमें आनो ॥ कह० कहत्त साहिबसों रहुआ ॥ तुम नीची कुल बेलि वृक्ष हम ऊचे महुआ ॥ ३१ ॥ गुलतुर्रासों जायकै, बाद करे जु करील ॥ जम तुम सूखे एकसे, पूछ देखिये भील ॥ पूछ देखिये भील भेद जो जाने मेरा ॥ तूहूं पूछ बुलाय भेद जो जाने तेरा ॥ कह गिरिधर कविराय कहत ना तारिहै हुर्रा ॥ अब जिन भूलि गुमान करै फिरहौं गुलतुर्रा ॥ ३२ ॥ बकुला झपटत बाजपै, बाज रहै शिर नाय ॥ कुलहा दीने पग बंधे, खोटे दे पहराय ॥ खोटे दे पहराय कहै जो जो मन आवै ॥ कुऊहा ले गयो छोरि धनी बिन

को न छुडावे ॥ कह० अरे तू सुन खग नगुला ॥
समौ आपनो जान बाज पैं झपटै बगुला ॥ ३३ ॥
कौआ कहत मरालसों, कौन जातिको गोत ॥ तोसूं
बदरूपी महा, कोउ न जगमें होत ॥ कोउ न जगमें
होत कुटिल मैले मल खाने ॥ ऊपर बैठ मर्याद भ्रष्ट
आचार न जाने ॥ कह० कहांते आया हौआ ॥
धन्य हमारा देश जहां सज्जन जन कौआ ॥ ३४ ॥
सांई घोडनके अछत, गदह न आयो राज ॥ कौआ
लीजे हाथमें, दूर कीजिये बाज ॥ दूर कीजिये बाज
राज ऐसोही आयो ॥ सिंह कैदमें कियो स्याल
गजराज चढायो ॥ कह० जहाँ यह बूझ बडाई ॥
तहां न कीजे सांझ सवेरहि चलिये सांई ॥ ३५ ॥
भौंरा यह दिन कठिन हैं, दुख सुख सहौ शरीर ॥
जबलग फूले केतकी, तबलग बिलम करीर ॥ तब
लग बिलम करीर रोष मनमें नहीं कीजे ॥ जैसी बहै
बयार पीठ तब तैसी दीजे ॥ कह० होय जिन

जियमें बौरा ॥ सहै दुःख अरु सुक्ख एक सज्जन अरु भौंरा ॥ ३६ ॥ हरिणा बिचऱ्यो सिंहसों, औझर खुरी चलाय ॥ झारखंड झीनो पऱ्यो, सिंहा गयो बराय ॥ सिंहा गयो बराय समौ सामर्थ्य विचाऱ्यो ॥ कुलहा काल भगाय फेर हँसहीमें हाऱ्यो ॥ कह० मोंहि याहि वन फिरना ॥ आज गई करि जाऊँ काल्ह हौंहौंके हरिणा ॥ ३७ ॥ पानी बाढ्यो नावमें, घरमें बाढ्यो दाम ॥ दोऊ हाथ उलीचिये, यही सयानो काम ॥ यही सयानो काम नाम ईश्वरको लीजै ॥ परस्वारथके काज शीश आगे धर दीजै ॥ कह० बडेनकी याही बानी ॥ चलियै चाल सुचाल राखिये अपनो पानी ॥ ३८ ॥ मैं ना जानो जीवकी, तो ताकौं दिन रैन, बकबकरी केता कहौ, मोर कहाँते चैन ॥ मोर कहाँते चैन जगत्में तीतरु जानौ ॥ गलि गलि आई बाज मौन याहीतें ठान्यो ॥ कह०सुनो कुरंगके बैना ॥

पिय गल डारी बांह हंस मुख देखौ मैना ॥ ३९ ॥ हुक्का बांध्यो फैंटमें, नै गहि लीनी हाथ ॥ चले राह-में जात है, बँधी तमाखू साथ ॥ बँधी तमाखू साथ गैलको धन्धा भूल्यो ॥ गई सब चिंता दूर आग देखत मन फूल्यो ॥ कह० जु जमको आयो रुक्का ॥ जीव लै गयो काल हाथमें रह गयो हुक्का ॥ ४० ॥

अथ बरवा ।

हरिपद रुचिर तरुनियां चट मन मोर ॥ तर भवसागर अबहिं दिन रहे थोर ॥ १ ॥ मोहनको मुख सोहन जोहन योग ॥ रूप असन अँखियनको भस्मकरोग ॥ २ ॥ ऊंच जाति ब्राह्मणियां बरणि न जाय ॥ दौर दौर पाँ लागी शीश छुवाय ॥ ३ ॥ बडि बडि आंख बरिनियां हिय हरि लेय ॥ पतरीके अस टोप करेजवा देय ॥ ४ ॥ घाट बाट लै वानी हाट बईठ ॥ डहकत काहु न जानि बतियन मीठ ॥५॥

नीक जाति कुरमितिकी खुरपी हाथ ॥ आपन खेत निरावै पीके सात ॥ ६ ॥ अहिरनि मनकी गहिरनि उत्तर न देय ॥ नैना करै मथनिया मनमथ लेय ॥ ७ ॥ हलुआ अस हलवनियां गलवा लाल ॥ लाल लाल दै जु बना नैन रसाल ॥ ८ ॥ टेढि माँग नायन कीन हरिनि हाथ ॥ फिर पाछे जो हेरै महतो साथ ॥ ९ ॥ चीकन गात तेलनियां वरणि न जाय ॥ चितवत रूप अनूप दृष्टि लपटाय ॥ १० ॥ मैली एक धोबनियां ऊजर गांव ॥ [illegible] कंत विन लै लै कलपति नांव ॥ ११ ॥ झमक चली कसाबिनिया दै दै सैन ॥ धरै करेजवा छुरिया करकर पैन ॥ १२ ॥ नीक जाति तुरकिनकी बहुतै लाज ॥ जानै पियकी सेवा और न काज ॥ १३ ॥ सुंदरि तरुणि तम्बोरिनि तरे दुकान ॥ हेरे हँसहि हरै मन फेरै पान ॥ १४ ॥ भरभूजि-नि कन भूजहि बैठि दुकान ॥ पुटका कराति बिहँ-

सिकै विरहीप्रान ॥ १५ ॥ कलवारी मदमाती कामकलोल ॥ भर भर देति पियलवा महा ठठोल ॥ १६ ॥ कृष्ण वार तनु नाजुक कैथिनि नारि ॥ संक भरे घुंघट हगनान निहारि ॥ १७ ॥ अचरज करत लुहरिया पियके पास ॥ जाहि छुवत बिन यके लेइ उसास ॥१८॥ खेलै फाग घना बहु धूरि उडानि ॥ गावौ बालम वरवौ ऋतु नियरानि ॥१९॥ निशि दिन बसै हिरदवा मिलन न होय ॥ जिमि पानीके चंदहि छुवै न कोय ॥ २० ॥ पात पात करि ढूंढौ सब बन बीन ॥ घटहि हुते मोरे बालम परे न चीन ॥ २१ ॥ हाथ उपरिया रहगइ गिरगइ आगि ॥ घरकी पौरि बिसरि गई गोहिनि लागि ॥ २२ ॥ बालम सुरत बिसर गई कहत सँदेश ॥ एकौ पथिक न बहुऱ्यो कस वह देश ॥ २३ ॥ बिलमि रहो मेरे बालम तुम कस कीन ॥ लोक कुटुम हम छाँडसि तुममें दीन ॥ २४ ॥ बालम

तुम तन चितवत गागरि फूटि ॥ अंधरा गोफ हराय धरम गो छूटि ॥ २५ ॥ सूर तपैं शिर ऊपर कहतहुँ न छाँह ॥ ठाढी पंथ निहारौं कत मोरो नाह ॥ २६ ॥ बालमकी सुध आवत यह गति मोर ॥ निकस निकस जियपै सत ज्यों चकडोर ॥ २७ ॥ बिरहनि ढूंढन वन गई बाघ भिटान ॥ बघवासूं घन खाइल बिरहनि जान ॥ २८ ॥ नित उठ जाऊँ पनघटवा आवहुँ रोय ॥ बालमकी उनहरवा दिखहुँ न कोय ॥ २९ ॥ बोली आनि कोयलिया मधुरा बानि ॥ मधुआ रोवै ठाढि आंम बौरानि ॥ ३० ॥ प्रेमप्रीतिको बिरहा चले हुलगाय ॥ सींचनकी सुधि लीजो बिसर न जाय ॥ ३१ ॥ अस मन होत बलम अब कतहुँ न जाय ॥ रखियै रातहु दिवस हिरदवा लाय ॥ ३२ ॥ पात पात कर लूटि सविपिन समाज ॥ राजनीति यह कसि कसि कस ऋतुराज ॥ ३३ ॥ चलत न शोच करासि सखि गुन सभाग ॥

है ससुरार तुम्हारिहु घर बन बाग ॥ ३४ ॥ कारे वरण कोयलिया कुहकति आनि ॥ अँबवा चढि डरपावति पिय बिन जानि ॥३५॥ भैन भेट बालम सन भटकिहु आइ ॥ धाय धाय बन खाय देखनाहिं जाइ ॥३६॥ बालम चलत न भेटे छतिया लाय ॥ सोई कसक करेजवा कसकति आय ॥ ३७ ॥ अँदरन धरी धनुहियां करत अचेत ॥ बुंदियनके करि बाण करेजवा देत ॥ ३८ ॥ नैना भीतर मितवा रहत जु ठाढ ॥ निकसन कबहूं भेटिस अस मन गाढ ॥३९॥ हरदबरन मारी देही पियहि वियोग ॥ कौन विथा मुहिं बूझहु बाउरलोग ॥ ४० ॥

इति बरवा समाप्त ।

अथ अरिल्ल ।

भजे सुआं हरिनामकों बैठा ताकमें ॥ दिना चारका रंग मिलेगा खाकमें ॥ साहब बेग सँभार कालसों

रार रहै॥ जमके हाथ गिलोल फटक्का पार है॥१॥ यह दुनिया बाजीद पलकका पेखना ॥ यामें बहुत विकार कहो क्या देखना ॥ सब जीवनका जीव जगत आधार है॥ जो न भजै भगवंत छठीमें छार है ॥२॥ दो दो दीपक बाल महलमें सोवते ॥ नारीसे कर नेह जगत नहिं जोवते ॥ सोंधा तेल लगाय पान मुख खांयगे ॥ विना भजन भगवान् कि मिथ्या जांयगे ॥३॥ रामनामकी लूट फवै है जीवको॥ निशि वासर कर ध्यान सुमिर तू पीवको॥ यहै बात परसिद्ध कहत सब गांव रे॥ परहां बाजीदा अधम अजामिल तरे नारायणनाव रे॥४॥ गाफिल हूए जीव कहो क्या बनत है॥ या मानुषके सांस जु कोउ गनत है॥जाग लेय हरिनाम कहांलो सोय है॥ परहां बाजीदा चाकीके मुख पऱ्यौसु मैदा होय है ॥५॥ आज सुने कै काल कहत हौं तुझको॥ भावे वैरी जान जीव तू मुझको ॥ देखत अपनी

दृष्टि गोता क्यों खातहै॥ परहां बाजीदा लोहेको सो ताव जन्म यह जात है॥६॥ केते अर्जुन भीम भये यशवंतसे ॥ केते गिने अशंक बली हनुमंतसे ॥ जिनके सुन सुन हांक महागिरि फाटते ॥ परहां बाजीदा तिन घर खायो काल जो इन्द्रहि डाटते ॥७॥ हौं जानौ कछु मीठ अंत कहतूत है ॥ देखो हृदय विचार यह देह अनीत है ॥ पान फूल रस भोग अंतकहँ रोग हैं ॥ परहां बाजीदा प्रीतम प्रभुके नाम विना सब सोग है ॥ ८॥ देख तमाशा अजब जो लगी पठाननू ॥ होया खडा निहंग पकड सुजाननू ॥ लगा लुटावन आप आपना सब्ब जर ॥ परहां बाजीदा कौन साहिबनू आखे यों नहीं यौंही कर ॥९॥ न बियांदा सिरताज खंभ दरगाहदा ॥ सबनादा मखबूल रसूल खुदायदा॥ उन्मतदे पुत जीवन उसदी जान मर ॥ परहां बाजीदा कौन साहीबनू आखेयौं नहिं यौंही कर ॥ १० ॥ बिना बासका फूलन ताहि

सराहिये ॥ बहुत मित्रकी नारिसों प्रीति न चाहिये ॥ शठ साहिबकी सेव कबहूं नाहिं कीजिये ॥ परहां बाजीदा विद्या बिनु अरु जिंद अकाज न दीजिये ॥ ११ ॥ इकरा कहत कलिमा नाहिं डूबा कोइ रे ॥ अर्ध नाम पाषान तरानिर लोह रे ॥ कर्म्मोंकि केतिक बात बिलग व्है जाइँगे ॥ परहां बाजीदा हाथीके असवार कुत्ते क्यों खाइँगे ॥ १२ ॥ कुंजर मनमें मत्त मरे तौ मारिये ॥ कामिनि कनक कलेस टरै तौ टारिये ॥ हरिभक्तनसों नेह पले तो पालिये ॥ परहां बाजीदा रामभजनमें देह गले तो गालिये ॥ १३ ॥ जेती बोली वानी सो तो बह रही ॥ हृदयकपटकी बात तौ मुखसों का कही ॥ बोलै बोली बोल बुलाई पीउकी ॥ परहां बाजीदा ऊपरकी सब झूठ फलैगी जीउकी ॥ १४ ॥ घडी घडी घडियाल पुकारै कही है ॥ बहुत गई है अवध अलपही रही है ॥ सोवे कहा अचेत जाग जप पीउरे ॥

परहां बाजीदा चलिहै आजकी काल बटाऊ जीउ रे ॥ १५ ॥ जो जीमें कछु ज्ञान पकर रहु मन्नको ॥ निपटहि हरिको हेत जाँच तू जन्नको ॥ प्रीतिसहित दिन रैन राम मुख बोलई ॥ परहा बाजीदा रोटी लिये हाथ नाथ संग डोलई ॥ १६ ॥ पौनौ लगै न ताहि तहालौ गोय रे ॥ रीते हाथ न जाय जगत् सब जोय रे ॥ यह माया बाजीदगा चले क्या साथ रे ॥ बहते पानी बीर पखालो हाथ रे ॥ १७ ॥ पाहनको रार है बरसतेमें हमें ॥ घाल धरी बाजीद दुष्टता देहमें ॥ डसै औचका आय मूँड गहि रोइयै ॥ परहा सर्पहि दूध पिलाय वृथाही खोइयै ॥ १८ ॥ बदन विलोकत नैन भई हौं बावरी ॥ धारे दंड विभूति पगन द्वै पावरी ॥ कर योगनिको भेष सकल जग डोलहौं ॥ परहां बाजीदा ऐसा मरनेमें पीउ पीउ बोलिहौं ॥१९॥ एकै नाम अंत किहूँ कह लीजियै ॥ जन्म जन्मके पाप चुनौती दीजियै ॥ लेकर चिनगी

आग आन घर अब्बरे ॥ परहां बाजीदा कोटिन भरी कपास जाय जल सब्बरे ॥ २० ॥

अथ छप्पय ।

तिलक भाल वनमाल अधिक राजत रसाल छवि ॥ मोरमुकुटकी लटक चटक वर्णत अटकत कवि ॥ पीतांबर फहरान मधुर मुसक्यान कपोलन ॥ रच्यो रुचिर मुख पान तान गावे मृदु बोलन ॥ रतिकोटि-काम अभिराम अतिदुष्टनिकन्दन गिरिधरन ॥ आनन्दकन्द ब्रजचंद प्रभु सुजय जय जय अशरन शरन ॥ १ ॥ मोरमुकुट नगजडित कनककुंडल श्रुति झलकैं ॥ मृगमदतिलक लिलाट कमललोचन दल पलकैं ॥ घुंघरवारी अलक सुकौस्तुभ कंठ बिराजैं ॥ पीतवसन वनमाल मधुर मुरली धुन बाजैं ॥ करत कोटि आभा बरण सुचंद सूर्य्य देखत लजत ॥ ब्रह्मदेव सुरभक्तजन सुश्यामरूप प्रीतम सजत ॥२॥

चतुराननसम बुद्धि विदित जो होय कोटि घर ॥ इक इक घर प्रति निधि शशी जो होय कोटि वर ॥ शीस शीस प्रति वदन कोटि करतार बनावै ॥ एक एक मुखमाहिं रसन फिर कोटि लगावै ॥ रसन रसन प्रति शारदा कोटि बैठि वाणी बकहिं ॥ नहिं जन अनाथके नाथकी महिमा तबहुँ न कहि सकहिं ॥ ३ ॥ भूमि परत अवतरत करत बालकाविनोद-रस ॥ पुनि यौवन मदमत्त तत्त्व इंद्रिय अनंगवस ॥ विषयहेतु जड करत बहुरि पहुँच्यो वृद्धप्पन ॥ गयो जन्म गुण गनत अंत कछु भयो न अप्पन ॥ थिर रहत न कोउ नरपति नवल रहत एक चहुँ युग्ग यश ॥ सोई अजर अमर नरहरि निरखि जु पियत भक्ति भगवंत रस ॥४॥ विमल चित्त करि मित्र शत्रु छल-बल वश किज्जिय ॥ प्रभु सेवावश करिय लोभवन्तहि धन दिज्जिय ॥ युवति प्रेमवश करिय साध आदरवश आनिय ॥ महाराज गुण कथन बंधु सम रस सनमा-

निय ॥ गुरुनिमित्त शशि सरस सो रसिक विद्याबल बुध मन हरिय ॥ मूरख विनोद सुकथा वचन शुभ स्वभाव जग वश करिय ॥ ५ ॥ याचक लघु पद लहै काम आतुर कलंकपद ॥ लोभी दुरयश लहै अशन लालच लीहै गद ॥ मूरख औ गुण लहै लहै पढि पढि गुण पंडित ॥ शूर सुरण जै लहै रहै रणमहँ महिमंडित ॥ निर्वाणसुपद योगी लहै जो न गहै ममता सुमति ॥ सुख भगत जगत जन लहैं करै जु नौ विधि भक्ति अति ॥ ६ ॥ धिक मंगन बिन गुणहिं गुण सुधिक सुनत न रीझै ॥ रीझक धिक बिन मौज मौज धिक देत जो खीझै ॥ देवो धिक बिन साँच साँच धिक धर्म न भावै ॥ धर्मसु धिक बिन दया दया धिक अरिकहँ आवै ॥ अरि धिक चित्त न शालई चित धिक जहां न उदारमति ॥ मति धिक केशव ज्ञान बिन ज्ञान सु धिक बिन हरिभगति ॥ ७ ॥ न कुछ कृपा बिन बिप्र न कुछ कायर

जिय क्षत्री ॥ न कुछ नीति बिन नृपति न कुछ अक्षर बिन मंत्री ॥ न कुछ बाम बिन धाम न कुछ विन गथ गरुवाई ॥ न कुछ कपटको हेत न कुछ मुख आप बडाई ॥ न कुछ दान सनमान बिन न कुछ सुभोजन जासु दिन ॥ नर सुनौ सकल नरहरि कहत न कुछ जन्म हरिभक्ति बिन ॥ ८ ॥ यदपि कुसंग संग लाभ तदपि वह संग न किज्जिय ॥ यदपि धनिक हो निधन तदपि धन प्रकृति न लिज्जिय ॥ यदपि दान नहिं शक्ति तदपि सनमान न खुट्टिय ॥ यदपि प्रीति उर घटै तदपि मुख उघन टुट्टिय ॥ सुन सुयश दुवार किवाँड दै कुयश जमाल न मुक्कियै ॥ जिय जाय यदपि भलपन करत तउ न भलप्पन चुक्कियै ॥ ९ ॥ तजहु जगत बिन भवन भवन तज त्रिय बिन कीनो ॥ त्रिय तजहु जु न सुख देय दुःख तज संपति हीनो ॥ संपति तज विन दान दान तज जहँ न विप्र मति ॥ विप्र तज विन धर्म धर्म तन

जियै विन भूपति ॥ तज भूप भूमि विन भूमि तज दीह दुर्ग विन जो बसै ॥ तज दुर्गसु केशवदासकवि जहां न पूरण जल लसै ॥ १० ॥ मूढ तपी सम कृती दुष्ट मानी गृहस्थ नर ॥ नायक अति आलसी विपुल धनवंत कृपणकर ॥ धर्मी दुष्ट स्वभाव वेदपाठी अधर्मरत ॥ पराधीन शुचिवंत भूमिपालकविदेहसत ॥ रोगी दरिद्र पीडित पुरुष वृद्ध नारि रस गृद्ध चित ॥ एते विडंब संसारमें इन सबको धिक्कार नित ॥ ११ ॥ तियबल जोबन समै साधुबल शिवपद संबर ॥ नृपबल तेज प्रताप दुष्टबल वचन अडंबर ॥ निर्धनबल सुमिलाप दान सवा याचकबल ॥ बनिजसुबल व्यापार ज्ञानबल वर विवेकदल ॥ इम विद्या विनय उदारबल गुणसमूह प्रभुबल दरव ॥ परिवारसुबल सुविचार कर होहिं एक संमत सरब ॥ १२ ॥ नरपतिमंडन नीति पुरुषमंडन मतधीरज ॥ पंडितमंडन विनय

तालरसमंडन नीरज ॥ कुलतियमंडन लाज वचन-मंडन प्रसन्नमुख ॥ मतिमंडन कवि कर्म साधुमंडन समाधि सुख ॥ भुजबलमंडन क्षमा सुगृहपतिमंडन विपुल धन ॥ मंडनसिधरुचि संत कहि कायामंडन बसन धन ॥ १३ ॥ ज्ञानवन्त हठ गहै निधन परिवार बढावै ॥ बंधुआ करै गुमान धनी सेवक है धावै ॥ पंडित किरियाहीन रांड दुरबुद्धि प्रवानै ॥ वृद्ध न समझै धर्म नारि भर्ता रिपु मानै ॥ कुलवन्त पुरुष कुलविधि लजै बंधु न मानै बंधुहित ॥ संन्यास धार धन संग्रहै ये जगमें मूरख विदित ॥ १४ ॥ गई भूमि फिर मिले बेलि फिर जमे जरेते ॥ फल फूलनते फलै फूल फूलंत झरेते ॥ केशव विद्या निकट बिकट बिसरी फिर आवै ॥ बहुरी होय धन धर्म गई संपति फिर पावै ॥ होय जु शील सुशील अति जगत हेतु इम गाइये ॥ प्राण गये फिर मिलैं पै पत न गई फिर पाइये ॥ १५ ॥ सर सर हंस न

होत बाजि गज राजन दर दर ॥ तरु तरु सुफल न होत नारि पतिव्रता न घर घर ॥ तन तन सुमति न होत मोति जल बुंद न घन घन ॥ फन फन मणि नहिं होत सर्व मलया नहिं वन बन ॥ कहुँ रण होहि न शूर सब नर नर होत भक्त हर ॥ नर-हरि सुकवि कवित्त किय सर्व होहिं नहिं एक-सर ॥ १६ ॥ इति छप्पय समास ॥

पहेली ।

एक नारि अरु पुरुष है ढेर ॥ सबसे मिलै एकही बेर ॥ दिना चारका अंतर होय ॥ लपट पुरुष छुडावै सोय ॥ १ ॥ (कंघी) पानीमें निशि दिन रहै, जाके हाड न माँस ॥ काम करै तरवारको, फिर पानीमें बास ॥ २ ॥ (कुम्हारका डोरा) जलमें रहै झूठ नहिं भाषै, बसै सुनगरमझार ॥ मच्छ कच्छ दादुर नहिं, पंडित करो विचार ॥ ३ ॥ (घडी) सोनेकी वह नारि कहावै ॥ दाल चावलके

मोल बिकावै ॥४॥ (कंचनी) श्याम बरण पर हरि नहिं, जटा धरै नहिं ईश ॥ ना जानू पिय कौन है, पंख लगाये शीस ॥ ५ ॥ (कसेरू) इक तरुवर अरु आधो नाम ॥ अर्थ करौ कै छाँडौ ग्राम ॥६॥ (नीम) जलकर उपजे जलमें रहै ॥ आखौं देखा खुसरो कहै ॥ ७ ॥ (काजल) शीस जटा पोथी गये, श्वेत बसन गलमांहि ॥ योगी जंगम है नहीं, ब्राह्मण पंडित नाहिं ॥ ८ ॥ (लहसन) श्याम वरण पीतांबर कांधे, मुरलीधर नहिं होय ॥ बिन मुरली वह नाद करत है, बिरला बूझे कोय ॥ ९ ॥ (भौंरा) कर बोले करही सुने, श्रवण सुनै नहिं ताहि ॥ कहै पहेली बीरबल, सुनिये अकबरशाहि ॥ १० ॥ (नाडी) बांबी वाकी जल भरी, ऊपर जारी आग ॥ जबै बजाई बाँसुरी, निकऱ्यो कारो नाग ॥ ११ ॥ (हुक्का) जाके पान न कोंपफल, पेडहि देय जलाय ॥ सो तरुवर बहु फुल्लिया,

देखो लोगो आय ॥ १२ ॥ (औंचंपा) शीस केश बिन चुटिया तीन ॥ औगुण लेत पराये छीन ॥ जोइ जाय उनके दरबार ॥ ताके मूँड न राखै बार ॥ १३ ॥ (त्रिवेणी) रात पडै तब पडने लागी ॥ दिनको सुई रैनिको जागी ॥ उसका मोती नाम बताया ॥ बूझो तुम मैं कूक सुनाया ॥ १४ ॥ (ओस) नर नारी हम एकै दीठे ॥ जों जों बोलै त्यों त्यों मीठे ॥ एक न्हाय इक सेकनहारा ॥ कह खुसरो नाहिं कीच न गारा ॥ १५ ॥ (नगारा) श्याम वरण अरु सोहनी, फुलनी छाई पीठ ॥ सब पुरुषनके गल परत, ऐसी लंगर ढीठ ॥ १६ ॥ (ढाल) शिरपर सोहै गंगजल, मुंडमाल गलमाहिं ॥ वाहन वाको वृषभ है, शिव कहिये के नाहिं ॥ १७ ॥ (रहँट) रंगविरंग इक पक्षी बना ॥ छोटि चोच अरु काटे घना ॥ तीस तीस मिल बिलमें बसै ॥ जीव नहिं अरु उडके डसै ॥ १८ ॥

(तीर) देखा एक अनोखी नारी ॥ गुण उसमें इक सबसे भारी ॥ पढी नहीं अरु अचरज आवै ॥ मरना जीना तुरत बतावै ॥ १९ ॥ (नाडी) फाट्यो पेट दरिद्री नाम ॥ उत्तम घरमें वाको ठाम ॥ श्रीको अनुज विष्णुको सारो ॥ पंडित होय सो अर्थ विचारो ॥ २० ॥ (शंख) नरके पेट जो नारी बसै ॥ पकड दिखाये खिलखिल हँसै ॥ पेट फाट जब नारी गिरी ॥ मोको लागी प्यारी खरी ॥ २१ ॥ (गिरी) बारेसे वह सबको भावे ॥ बढा हुआ कुछ काम न आवै ॥ मैं कह दिया उसका नाम ॥ अर्थ करो कै छोडो गाम ॥ २२ ॥ (दिया) चहूँ ओर फिर आई ॥ जिन देखा तिन खाई ॥ २३ ॥ (खाई) आधी बूबू सारी रानी ॥ अर्थ करौ कोइ पंडित ज्ञानी ॥ २४ ॥ (बुरानी) नारी एक शहरमें सोई ॥ सभी वस्तु वाके घर होई ॥ खाय कछू नहिं पीवै पानी ॥ लोग कहै यह खरी दिवानी ॥ २५ ॥

(खारीबावली) नारि बुलाई खरचे दाम ॥ तनु गोरा औ अभरण श्याम ॥ आवतही परदेश सिधारी ॥ पहुँची जहां भई अति प्यारी ॥ भरी गई रीती व्है आई ॥ तब तहँ नारी पुरुष कहाई ॥ २६ ॥ (हुंडी) अरबी कहौं तो पाईना ॥ पारसी कहौं तो आई ना ॥ हिंदि कहत आरसी आवै ॥ कहो पहेली कौन बतावै ॥२७॥ (दर्पण) आदि कटेते सबको पारै ॥ मध्य कटेते सबको मारै ॥ अंत कटेते सबको मीठा ॥ सो खुसरो मैं आंखों दीठा ॥ २८ ॥ (काजल) पक्षी एक श्वेत औ ह्र्यो ॥ निशि दिन है नाकमें पर्‍यो ॥ ना कछु पीवै ना कछु खाय ॥ अश्व बराबर दौर्‍यो जाय ॥ २९ ॥ (बकसुआ) एक नारि औरैसी काली ॥ कान नहीं अरु पहरे बाली ॥ नाक नहीं अरु सूंघे फूल ॥ जेता अरज तिताही तूल ॥३०॥ (ढाल) इक नारी वह है बहु रंगी ॥ घरसे बाहर निकसे नंगी ॥ उस नारीका यही सिंगार ॥

शिरपर नथनी मुहपर वार ॥३१॥ (तलवार) डाल दीजे देखा कीजे ॥ ३२ ॥ (चिक) हाथमें लीजे देखा कीजे ॥ ३३ ॥ (दर्पण) इक नारी करतार बनाई ॥ ना वह कारी वह व्याही ॥ सुहे रंग सदाही रहै ॥ भाभी भाभी सब जग कहै ॥ ३४ ॥ (बीर-बहूटी) आधा भक्तन मुख बसै, आधा गुणियन साथ ॥ वाहि पसारी देत हैं, पुडी बांधके हाथ ॥३५॥ (हरताल) खेतमें उपजै सब कोउ खाय ॥ घरमें है तो घर बहि जाय ॥ ३६ ॥ (फूट) लाग कहें लागे नहीं, बरजत लागै धाय ॥ कही पहेली एक मैं, दीजो चतुर बताय ॥ ३७ ॥ (होंठ) लक्ष्मीपतिके कर बसै, पंचाक्षरके माहं ॥ पहला अक्षर छांडिके, सो दीनो तुमनाहँ ॥ ३८ ॥ (दूर-सन) एक अचंभा देखो चल ॥ सूखी लकडी लागे फल ॥ जो कोई उस फलको खाय ॥ पेड छोड वह अंत न जाय ॥ ३९ ॥ (बरछी) योगी एक

मठीमें सोवै ॥ मद पीवै औ मस्त न होवै ॥ जबहीं बालक कानमें लागा ॥ योगी छोड मठीको भागा ॥ ४० ॥ (गोला) इति पहेली ।

मुकरी ।

अर्धं निशा वह आयो भौन ॥ सुंदरता वरणै कहि कौन ॥ निरखतही मन भयो अनंद ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि चंद ॥ १ ॥ खुल गई गांठ न खोले खोले ॥ जहाँ तहाँ मेरे सँग डोले ॥ हियो विराजत होथ न भार ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि हार ॥ २ ॥ दासी दे मैं मोल मँगायौ ॥ अंग अंग सब खोल दिखायौ ॥ वासो मेरो भयो जु मेल ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि तेल ॥ ३ ॥ मैं अपनो मन दीनो ऐन ॥ सुंदर रूप सुहावै बैन ॥ ढिगते कबहुं न करिहौं जूआ ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि सूआ ॥ ४ ॥ वा विन चित्त चहूं दिशि डोलै ॥ चातक

ज्यों पुनि पिय पिय बोलै ॥ प्रलय होय आवै नहिं गेह ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि मेह ॥ ५ ॥ शोभा सदा बढावनहारा ॥ आंखनते छिन होत न न्यारा ॥ आठ पहर मेरो मन रंजन ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि अंजन ॥ ६ ॥ रात दिना जाको अति गौन ॥ खुले द्वार आवै मेरे भौन ॥ वाको हर्ष बताऊं कौन ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि पौन ॥ ७ ॥ बाट चलत मम अंचर गहै ॥ मेरी सुनै न अपनी कहै ॥ ना कछु मोसों झगरा झांटा ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि कांटा ॥ ८ ॥ बाट चलत में पडा जु पाया ॥ खोटा खरा नहिं परखाया ॥ हाथ लगै तब होवै कैसा ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि पैसा ॥ ९ ॥ देखतमें वह गांठ गठीला ॥ चाखनमें वह अधिक रसीला ॥ मुख चुंबौ तौ रसका भांडा ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि गांडा ॥ १० ॥ सिगरी रैनि वो मो सँग जाग्यौ ॥ भोर भयेते बिछ-

रन लग्यो ॥ वाके बिछुरत फाटै हिया ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि दिया ॥ ११ ॥ छठे छमासे मो घर आवे ॥ आपहि लै अरु मोहि हिलावै ॥ नाम लेत आवै मोहि शंका ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि पंखा ॥ १२ ॥ निशि दिन मेरे उरपर रहै ॥ दोऊ कुच लै गांठे गहै ॥ उतरत चढत करत झकझोरी ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि चोरी ॥ १३ ॥ मोको तो हाथीको भावै ॥ घट बढ हुय नाहिं सुहावै ॥ ढूंढढाँढके ल्याई पूरा ॥ क्यौं सखि सज्जन ना सखि चूरा ॥ १४ ॥ सिगारि रैन छातीपै राखा ॥ उसका रसकस मने चाखा ॥ भोर भया तब दिया उतार ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि हार ॥ १५ ॥ हरित रंग मोहि लागत नीको ॥ वा विन सब जग लागत फीको ॥ उतरत चढत मरोरत अंग ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि भंग ॥ १६ ॥ लंबी लंबी डगो जु आवै ॥ सारे दिनकी हौस बुझावै ॥ उठके चला तो पकडा खूंट ॥ क्यों

सखि सज्जन ना सखि ऊंट ॥ १७ ॥ दुर दुर करूं तौ दौडा आवे ॥ खन आंगन खन बाहर जावै ॥ देहडी छोड कहूं नहिं सूता ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि कुत्ता ॥ १८ ॥ छोटा मोटा अधिक सुहाना ॥ जो देखे सो होय दिवाना ॥ कबहूं बाहर कबहूं अंदर ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि बंदर ॥ १९ ॥ अति सुरग है रंगरँगीलो ॥ है गुणवंत बहुत चटकीलो ॥ रामभजन विन कभी न सोता ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि तोता ॥ २० ॥ आठ पहर मेरे ढिग रहै ॥ मीठी प्यारी बातें कहैं ॥ श्याम वरण अरु राते नैंना ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि मैना ॥२१॥ जब आवे तब जल भर लावै ॥ तन मनकी सब तपत बुझावै ॥ मनका भारी तनका छोटा ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि लोटा ॥ २२ ॥ धमक चढे सुध बुध बिसरावै ॥ दाबत जांघ बहुत सुख पावै ॥ अति बलवंत दिननिको थोरा ॥क्यों सखि सज्जन ना सखि

घोरा ॥ २३ ॥ अति सुन्दर जग चाहत जाको ॥ मैंभी देख लुभानी वाको ॥ देखत रूप भयो जो टोना ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि सोना ॥ २४ ॥ निशि दिन आंगन ऊभा रहै ॥ छायो धूप सब ऊपर सहै ॥ वाके देखे लगै न भूख ॥ क्यों सखि सज्जन ना सखि रूप ॥ २५ ॥ इति मुकरी समाप्त ।

अथ हियहुल्लास ।

दोहा ॥ प्रथमे ताको सुमिरिये, जिन दीनो गुरु ज्ञान ॥ ज्ञानी गुण गावै सदा, ध्यानी धरै जु ध्यान ॥ १ ॥ अंबर थाँम्यो थंभ बिन, धरती अधर धराव ॥ मनुषरूप ह्वै अवतर्‍यो, देखत कळिको भाव ॥ २ ॥ वा बिन तीनों लोकमें, नाहीं दूजो कोय ॥ मनमें निश्चय जानिये, होनी होय सु होय ॥ ३ ॥ अब कछु वरणो रीति रस, रसही जगको जीय ॥ रसना रसको यश कहै, जो सुख पावै

हीय ॥ ४ ॥ हियहुलास या ग्रंथको, राख्यो नाम विचार ॥ यामें सिगरे रागके, रचे रूप शृंगार ॥ ५ ॥ आदिनाद अनहद भयो, ताते उपज्यो वेद ॥ पुनि पायो वा वेदमें, सकल सृष्टिको भेद ॥ ६ ॥ प्राण पर्‍यो षट राग सुनि, तब उपज्यो वैराग ॥ बारे तरुने वृद्धको, ताते भावत राग ॥ ७ ॥ जगको धीरज राग है, राग रूपकी आन ॥ मन मजनसो राग है, राग प्रेमके प्रान ॥ ८ ॥ सुखको दाता राग है, राग रूपको भोग ॥ याहीते सब कहत हैं, राग रंग संयोग ॥ ९ ॥ राग हरै सब रोगको, राग चहै रसभोग ॥ बिरही झुरै जु रागको, उपजै महावियोग ॥ १० ॥

रागरागिनीनाम ।

भैरवकी धुन भैरवी, बंगाली बैरारि ॥ मधुमाधवी अरु सिंधुवी, पांचौं बिरहनि नारि ॥ ११ ॥ टोडी

गौरी गुणकली, खंबावति कोकव्व ॥ मालकौ-
सकी रागनी, गावत अति दुर्लब्ब ॥१२॥ रामकली
पटमंजरी, और कहो देसाख ॥ ये नारी हिंडोलकी,
ललित बिलावल राख ॥ १३ ॥ देखी नट अरु
कान्हरा, केदारा कामोद ॥ दीपककी प्यारी सबै,
महाप्रेम परमोद ॥ १४ ॥ धनाश्री आसावरी,
मारू बहुरि बसंत ॥ सिरीरागकी रागनी, मालसिरी
है अंत ॥ १५ ॥ भूपाली अरु गूजरी, देसीकार
मलारि ॥ तनक बियोगिनि कामिनी, मेघरागकी
नारि ॥ १६ ॥

रागगुणवर्णन ।

भैरवसुर सुरता कहै, कोल्हू चलै जु धाय ॥
मालकौस तब जानियै, पाहन पिघल बहाय
॥ १७ ॥ चलै हिंडोलो आपते, सुनत राग हिंडो-
ल ॥ बरषै जब घर धार अति, मेघरागके बोल

॥ १८ ॥ सिरीरागके सुर सुने, सूखो वृक्ष हराय ॥ दीपक दीपक जरि उठै, जो कोउ जानै गाय ॥ १९ ॥

रागआलापसमय।

पिछले पहरे निशि समै, भैरौं राग बखान ॥ मालकौस तब गाइयै, जबलौं निकसे भान ॥ २० ॥ एक पहर दिन चढे तब, कह्यो राग हिंडोल ॥ ठीक दुपहरीके समय, दीपकके सुर बोल ॥ २१ ॥ सिरीराग चौथे पहर, जबलौं दिन अँधियाय ॥ मेघराग जबही भलौ, जबै मेघ बरषाय ॥ २२ ॥ फागुनमें ये राग सब, जागत आठौं याम ॥ अष्टयाममें निशि समै, एक याम विश्राम ॥ २३ ॥

रागकी ऋतुवर्णन।

भैरौं शरद कौसिक सिसिर, और हिंडोल बसंत ॥ दीपक ग्रीषम हेमश्री, मेघ सुपावस अंत ॥ २४ ॥

बाजेवर्णन ।

जगमें सब सुर ताके, बाजे साडे तीन ॥ खाल तार अरु फूक पुनि, अर्धताल सुरहीन ॥ २५ ॥ खाल नगारो ढोल डफ, और पखावज जान ॥ तार तंबूरा बीन है, बहुरि रबाब बखान ॥ २६ ॥ फूक नफीरी बांसुरी, सरनाई करनाय ॥ ताल खंजरी झांझ सब, बाजे दये बताय ॥ २७ ॥

गानआसन ।

बैठे आसन ऊटकी, तब हो शुद्धालाप ॥ चलते लेटे सुर भरे, मानौ महाकलाप ॥ २८ ॥

भैरवस्वरूपवर्णन ।

भैरौं शिवछवि शिर जटा, श्वेत वसन तिर नैन ॥ मुंडनकी माला गरे, सिद्ध रूप सुखदैन ॥ २९ ॥ सवैया–शिव मूरति भैरुको भाव बन्यौ तिर नेतर मुंडकि

माल गरै ॥ पट श्वेत सबै तनुमें पहिरै हृदये भगवानको ध्यान धरै ॥ तिरशूल विराजत है करमें सब भामिनिको मन लेत हरै ॥ तन खार लगे द्युति दूनि भई चित चाषनिमें जिय जात छरै ॥ ३० ॥

रागनीस्वरूप ।

दोहा—शिव पूजत कैलास पर, दोऊ करमें ताल ॥ श्वेत चीर अंगिया अरुण, रूप भैरवी बाल ॥३१॥ भस्म पिटारी कर गहे, हाथ लिये तिरशूल ॥ बंगाली व्याकुल भई, गई सबै सुधि भूल ॥ ३२ ॥ कानन फूल सु झूमियां, कर कंकण शृंगार ॥ शीस केश सोहत छुवे, श्वेत वसन वैरार ॥ ३३ ॥ कंचन तन लोचन कमल, नागरी महा अनूप ॥ पियपै बैठी हँसति है, मधुमाधवि इह रूप ॥ ३४ ॥ पुहुप कदम कानन धरे, पहरे वस्तर लाल ॥ क्रोधवंत तिरशूल कर, लिये सिंधुवी बाल ॥ ३५ ॥

मालकौंसस्वरूपवर्णन ।

दोहा—मालकौंस लीले बसन, श्वेत छरी है हाथ ॥
मोतिनकी माला गरे, सिगरी सखियां साथ ॥ ३६ ॥
सवैया—कौसिककी उपमा है भली तनु गोरे विराजत है पट लीलो ॥ बाल गरे कर श्वेत छरी रिस प्रेमको राखत छैलछबीलो ॥ नागररूप उजागरि लै संग डोलत है सुखसों गरबीलो ॥ कामिनिको मन मोहत है मनभावन रूप अनंग रसीलो ॥ ३७ ॥

अथ रागिनीस्वरूप ।

दोहा—टोडी कर वीणा गहे, गावति पियके हेत ॥
चंचल छबि मृगलोचनी, पहरे बस्तर श्वेत ॥ ३८ ॥
गौरी छबि अति सांवरी, सब कोप धरे धान ॥ तिर सातन तपकामकी, गावत मीठी तान ॥ ३९ ॥
छुटे केश तनु गुनकली, बैठी पियके पास ॥ नीची ग्रीवा कीरे रही, अतिही चित्त उदास ॥ ४० ॥

खंबावति गोरे वसन, गावति कोकिल बैन ॥ अति आतुर चातुर खरी, कामवंत दिनरैन ४१ ॥ कोकब कामिनि सरसमें, जागी पियके संग ॥ रति मानै क छीन तन, अंग अंगमें रंग ॥ ४२ ॥

हिंडोलस्वरूपवर्णन ।

दोहा–पीत बसन गोरे वदन, हिंडोरे सखिमाहिं ॥ सखि झुलावति चावसों, गाय गाय मुसकाहिं ॥ ४३ ॥ सवैया–कीन्ह बनाव महाछवि सुंदर भावत बैठ्यो हिंडोल हिंडोलै ॥ झोक झुलावत ओर दुहूं सब गावति है सखियां मुख खोलै ॥ गोरोसो गात दिपात खरो मनु दामिनिसी द्युति देखिति सोलै ॥ वस्तर पीत लिये रसरीत अंनगसो सोहै हँसे मृदु बोलै ॥ ४४ ॥

रागनीस्वरूप ।

दोहा–रामकली नीले बसन, कंचनसी सब देह ॥ पिक बाणी गावति खडी, पियके प्रेमसनेह ॥ ४५ ॥

बिरहभरी पटमंजरी, मन मलीन तन छीन ॥ साख सीख अति देति है, भई प्रेम आधीन ॥ ४६ ॥ प्रिय-के करपर कर धरे, अति व्याप्यो तनु काम ॥ तन दुखला देसाख है, महाविरहनी वाम ॥ ४७ ॥ ललित गरे माला पुहुप, सुंदर तरुनी जान ॥ गोरी छबि वस्तर अरुण, नयन कामके बान ॥ ४८ ॥ काम-देवको ध्यान धरि, गावत गीत संगीत ॥ करत शृंगार बिलावली, लै लै बस्तरपीत ॥ ४९ ॥

दीपकरागस्वरूपवर्णन ।

दोहा—दीपक गजकी पीठपर, बैठ्यो बागो लाल ॥ मुक्तमाला सोभित गरे, चहुँ दिशि सिगरी बाल ॥ ५० ॥ सवैया—दीपकको परताप बडो चढि बैठि गयंदकि पीठ बिराजे ॥ अंबर राते शरीर सबै मुकतानकि माल गरे छवि छाजै ॥ संग सखी सब सोहति है तिनमाहिं जो आप गयंदसो गाजै ॥ सामर

रूप स्वरूप बन्यो द्युति देखत दुःख सबै तन भाजै ॥ ५१ ॥

रागिनीस्वरूप ।

दोहा—देसी अति बस्तर हरे, काम सताई नारि ॥ पतिको ठेल जगावती, सिसके बारंबारि ॥ ५२ ॥ अरून बरन सिगरे बसन, नटवासी नटनारि ॥ दोऊ कांधे कर धरे, पियतन रही निहारि ॥ ५३ ॥ शीशपत्र गजदंतको, कर बांकी तरवारि ॥ मोरकंठके बरण है, रूप काह्नरो नारि ॥ ५४ ॥ शीश जटा सब तन लटा, गरे जनेऊ नाग ॥ केदारो इह रूप है, धरै ध्यान वैराग ॥ ५५ ॥ कामवंत कामोद है, पीत बसन तन तास ॥ अम्बतरे बैठी हँसति, बिछुरी पियको पास ॥ ५६ ॥

श्रीरागस्वरूपवर्णन ।

दोहा—सिरीरागके कर कमल, भूपरूप पट लाल ॥ बर्ष अठारहका बरन, गावत कंठ रसाल ॥ ५७ ॥

सवैया-वर्ष अठारहको वरण्यो मुख देखतही सबके मन भावै ॥ वाम सबै बशके अपनी गुण गायके भावते भेद बतावै ॥ रातो जो बागो विराजत है कर वारिजफूल लिये मुसकावै ॥ भूपके रूप स्वरूप बन्यो सबहीमें भलो श्रीराग कहावै ॥ ५८ ॥

रागिनीस्वरूप।

दोहा-धनासिरी विरहानि बडी, हृदये बिरह अपार ॥ सब तन पियरो ह्वै रह्यो, निपट छीन तन बार ॥ ५९ ॥ चंदनटीको भालपर, गरे नागको हार ॥ छबि अति सुंदरि सांवरी, आसावरी कुमार ॥ ६० ॥ मारूके माला गरे, पिये प्रेमदामात ॥ तरुनी सांवरि सुंदरी, बैठी अलियन सात ॥ ६१ ॥ मोरपक्ष शिरपर धरे, बस्तर पीत लसंत ॥ कानफूल जो आबको, चहु दिशि भवँर भसंत ॥ ६२ ॥ मालसिरी दुर्बल वदन, सखी हाथपर हाथ ॥ चहूं ओर पतिको तकति, चहै मदनको साथ ॥ ६३ ॥

मेघरागस्वरूपवर्णन ।

दोहा—श्याम वसन जो मेघ है, गहे हाथ तरवार ॥ अति आतुर चातुर खरो, गावत सुरत विचार ॥ ६४ ॥ सवैया—मेघमलार महा अति सुंदर इंद्रकी छबि आप बन्यो है ॥ पहरे पट श्याम गहे तरवार जु माल गरे इहि भांति ठन्यो है ॥ जैसो जहँ चहिये जोइ अंग सो तैसियै भांतिमें आप धन्यो है ॥ कामको आतुर है अतिही तियकी रतिको चितचाव बन्यो है ॥ ६५ ॥

अथ रागिनीस्वरूप ।

दोहा—भूपाली बिहरन खरी, केसर पहरे चीर ॥ भयो बिरहकी ज्वालते, पीरो सबै शरीर ॥ ६६ ॥ बिरह जरा तनु गूजरी, रोवत छूटे केश ॥ कामदेव कान न लग, तिनहि दियो उपदेश ॥ ६७ ॥ देशकार कंचन बरन, खेलत पियके संग ॥ हिय हुलास है

कामको, चढ्यो जो जोबन अंग ॥ ६८ ॥ बीन गहे गावत बहुत, रोवति है जल ढार ॥ तनु दुर्बल बिरही वदन, दहै न नारि मलार ॥ ६९ ॥ सेज बिछाई कमल दल, लट रही मन मारि ॥ लेति उसास उसीयरी, जनकवियोगनि नारि ॥ ७० ॥

इति हियहुलास समाप्त ॥

दोहा ।

संग्रह करि कवि लालने, रच्यो काव्यरसरास ॥
धर्‍यो नाम या ग्रंथको याते सभाविलास ॥ १ ॥
यदपि काव्य भूषणसहित, दुर्जन दोषत ताहि ॥
बिगरे देत बनाय हैं, सज्जन साधु सराहि ॥ २ ॥
नग ऋषि वसु चंद्रहि गनौ, संवतको परमान ॥
माघशुक्ल नवमी रवौ, कियो ग्रंथ निर्मान ॥ ३ ॥

इति श्रीलल्लूलालजी-ब्राह्मणगुजरातीसहस्र-अवदीचआगरेवासीकृत सभाविलास संपूर्ण ।

निर्लोभप्रेम।

दोहा–विरह नेह निर्लोभता, अधिक प्रेम रस सार ॥ रसिकनिको रस रूपसे, प्रकट पदारथ चार ॥१॥ जो चाहे फल प्रेम तो, जियो नेहनिधियार॥ बिरहना ऊपर बैठके, तरो लोभ रसधार ॥ २ ॥ बूडत विरहसमुद्रमें, सरजीवनिके साथ ॥ नेह कीच निर्लोभ दृग, पर्‍यो प्रेम नग हाथ ॥ ३ ॥

अथ प्रेमनगर।

दोहा–प्रेमनगर ब्रजभूमिको, ब्रह्मशिखर पारि बास ॥ नेही नहीं विलोकतो, बिरही रहत उदास ॥ ४ ॥ प्रेमनगरमें जे बसे, तिनकी सूरति खूब ॥ कहूं कहूं आशिक रहे, कहूं कहूं महबूब ॥ ५ ॥ प्रेमनगरके डगरमें, छवि रहि बगर विशेषि ॥ आशिक दृग महबूब छबि, टकर कटर सब देषि ॥ ६ ॥ नेहनगरमें प्रेमघर, तहँ रसिकनिको बास ॥

डरपत कोउ झांके नहीं, बिरहानलके त्रास ॥ ७ ॥ प्रेमभूप गादी सुमन, दृग वजीर मति सार ॥ कोटबार बिरहा सबल, बडो नेह दरबार ॥ ८ ॥ येता नेह दरबारमें, नहिं वजीरकी चाह ॥ सहे तापकू बारको, मिले प्रेमपदसाह ॥ ९ ॥ गये नेहदरबारमें, लियो प्रेम मनु छीन ॥ नैनसैन डरलाइके, कियो बिरह आधीन ॥ १० ॥ ब्रह्मशिखरपर प्रेमपुर, सब रसको शिरताज ॥ आशक नेही बिरहनी, सब रसिकनिको राज ॥ ११ ॥ नेहनगरमें प्रेमफल, बिरह कोटिके मांझ ॥ और ठौर नहिं पाइये, जो फलहीनी बाँझ ॥ १२ ॥ बिरहकोटके बीच व्हे, नेहनगरकी राह ॥ प्रेमपौरि पग धरतही, बढे चौगुनो चाह ॥ १३ ॥ नेहनगर बिरहा सुघट, जहाँ प्रेमको राज ॥ भक्त रसिकजन जगतको, प्रकट कियो तिहिं काज ॥ १४ ॥

प्रेमफसनी।

खेलत रस महबूब छबि, नैन सैन सन्मान ॥ आशिक मन बट्टा किये, प्रेम रचो चौगान॥ १५ ॥ प्रेमनगरके डगरमें, ठरेहे डारत मारि ॥ चोधीलाइ देखाइ छबि, हाँसी फांसी झारि ॥ १६ ॥ चले प्रेम-रस लेनको, नेह नगरकी हाटि ॥ नैन सैनकी सांटि-में, परे विरहके बाटि ॥ १७ ॥ चाहत तऱ्यो सनेहनिधि, महबूबनिके संग ॥ पऱ्यो बिरहकी धारमें, बिच २ प्रेमतरंग ॥ १८ ॥ आशिक भयो पतंग मनु, छबि दीपक महबूब ॥ विरहानलमें जरत हों, देखो प्रेम अजूब ॥ १९ ॥ रूप सिकारी नैनगुण, मन जोबन जल जोर ॥ बद्ध छिझारी प्रेमकी, बँध्यो मीन मन मोर ॥ २० ॥ मैं जान्यों सुखमें जिये, पिये प्रेम रस मूल ॥ विरहानलमें तन जरे, मनको कछू न शूल ॥ २१ ॥ जब जब सुधि

आवत हिये, किये प्रेमरस लूटि ॥ पिये जहर बिरहा तऊ, तन मन जात न छूटि ॥ २२ ॥

प्रेममित्रको।

सज्जन दुजनके कहे, तुम मत छांडो प्रेम ॥ एक बेर सुधि कीजियो, यह राखो नित नेम ॥२३॥ हम जैसो तुम जनि करो, जगमें होइ अनीत ॥ अपनोसी तुम कीजियो, यहै प्रेम परतीत ॥ २४ ॥ लेखन लिखियो प्रेमसों, प्रीतम पत्र बताइ ॥ कहो जीनो कैसे बने, विन संदेश पिय पाइ ॥२५॥ जबसे पिय कागज लिखे, तबसे देखे मैं न ॥ प्रेमदृष्टि सींचे लखत, करें हरे तुअ नैन ॥ २६ ॥

२३।४।१५.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना.
कल्याण—मुंबई.



Te
Signature
Page No. :

बिक्रीको तैयार.

प्रश्नशिरोमणि भा. टी.–ज्योतिषका यह अपूर्व ग्रंथ पास रखनेसे समस्त प्रश्नोंका पूरा सच्चा २ हाल कहने-में निःसंदेह पूर्णतया समर्थ हो जाओगे. की. १॥ रु.

रसराजमहोदधि–संपूर्ण चारों भाग एकही सुंदर जि-ल्दोंमें छापकर तैयार है. की. ३॥ रु. और इसके प्रत्येक भाग अलगभी मिल सकते हैं. की.प्रत्येक भाग, १२ आ.

बृहत्कर्मविपाक (संस्कृत) ज्योतिषसार–यह पुस्तक बहुत परिश्रमसे मिलाकर प्रसिद्ध किया है. की. १॥ रु.

भाषविलासभिन्नं (नाटक) बालबोधिनीटीका-युतम्–की. १। रु. नूतन छपा है.

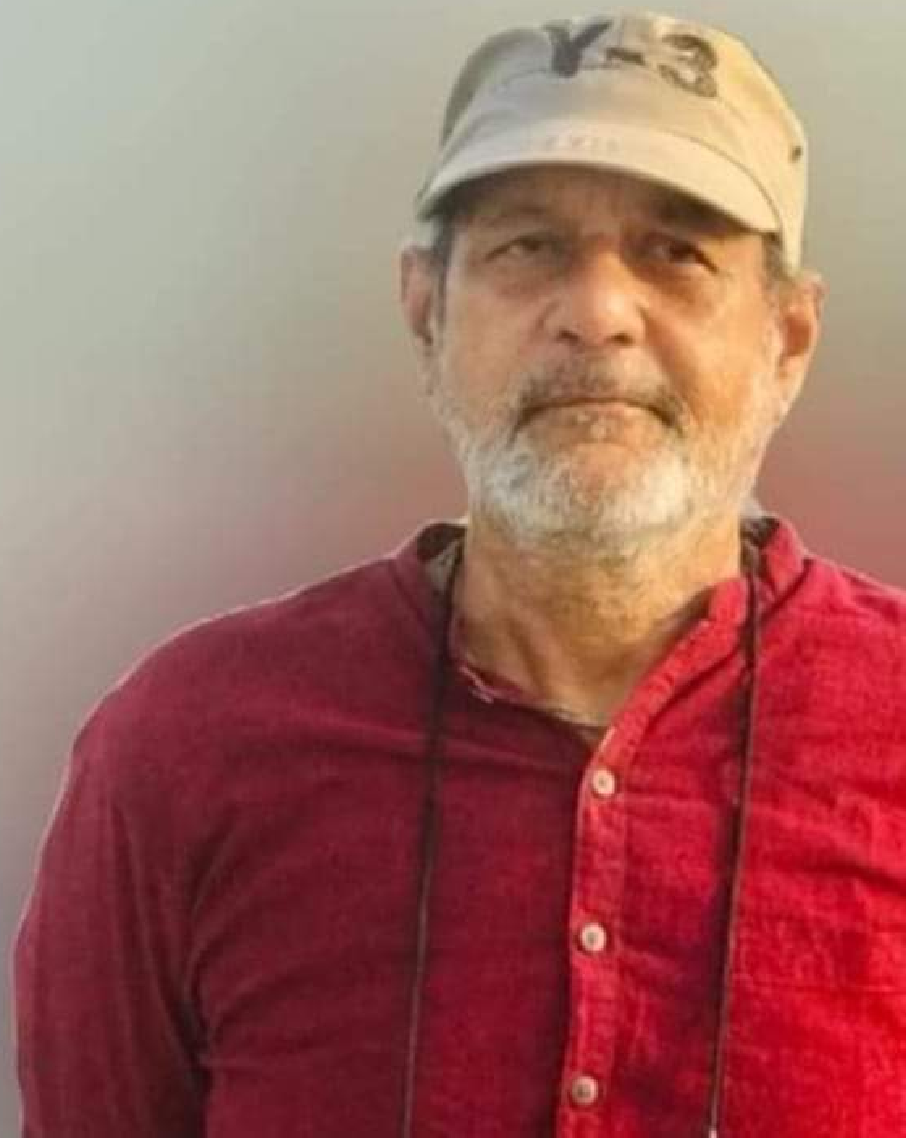
सुगमकौमुदी–(प्रथमद्वितीयखण्डात्मकः प्रथम-भागः) कीमत २ रु. आगेका द्वितीय भाग छपता है.

सिद्धांतचंद्रिका उत्तरार्ध–भाषाटीकासह संपूर्ण छपके तैयार है. की. २॥ रु. अन्यत्र नहीं छपी.

आल्हखंड ५२ गढकी मार–द्वितीय बार संपूर्ण लडाई इकट्ठा करके छपा है. की. २॥ रु.

भक्तमाल हरिभक्तिप्रकाशिका–सरल वार्तिकमें पं० ज्वालाप्रसादजीसे संशोधित. की. ४ रु.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास. 'लक्ष्मीवेंकटेश्वर' छापाखाना, कल्याण–मुंबई.


Y-3